कक्षा–**XII**

परिधान निर्माण– II

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

2 समुदाय केंद्र, प्रीत विहार, दिल्ली–110092

परिधान निर्माण–।।

पाठ्यपुस्तिका

कक्षा–**XII**

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

एवं

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान

के सहयोग से

परिधान निर्माण–।।

पाठ्यपुस्तिका

मूल्यः : 100/–

प्रथम संस्करण : जून 2014 सीबीएसई,भारत

प्रतियों की संख्या : 1000 प्रतियां

प्रयुक्त कागज : 80 जीएसएम सफेद मैपलिथो

इस पुस्तक अथवा इसके भाग का किसी व्यक्ति अथवा एजेंसी द्वारा किसी भी रूप में दोहराया **जाना** नही **चाहिए**

प्रकाशक :सचिव, **केन्द्रीय** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,
शिक्षा केंद्र, 2 समुदाय केंद्र, प्रीत विहार, दिल्ली–110092

डिजाइन, लेआउट : मल्टी ग्राफिक्स,8ए, 101, डब्ल्यूईए,करोलबाग, नई दिल्ली – 110 005
फोन नं. 011– 25783846

मुद्रक :बेरी आर्ट प्रैस, ए.9, मायापुरी, फेज–1, नई दिल्ली–64

आमुख

वस्त्र एवं फैशन उद्योग द्वारा भारतीय निर्यात आय में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। कृषि के **बाद यह** दूसरा सबसे बडा घरेलू रोजगारन्मुख क्षेत्र है। परिधान उद्योग को संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों में बांटा जा सकता है जो विविध उपभोक्ता वर्गों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। असंगठित क्षेत्र में बने बनाए वस्त्रों की बड़ी दुकानें, स्वतंत्र ढांचे एवं दर्जी की दुकानें, लद्यु उद्योग शामिल है, जबकि संगठित क्षेत्रों में अकेले या बहुत सारे ब्रॉन्डों की फुटकर दुकानें, डिजाइनर **बुटीक** इत्यादि शामिल हैं जो विशिष्**ट** वर्ग के उपभोक्ताओं को अपनी सेवाएं देते हैं। संगठित एवं ब्रॉन्डेड सेगमेंट में उच्च स्तर की वृद्धि के कारण सीएजीआर के अनुसार घरेलू वस्त्र बाजार मार्केट में 11 प्रतिशत की वृद्धि की संभावना व्यक्त की गयी है। जबकि 2011 में भारतीय कपड़ा व वस्त्र उद्योग का व्यापार 662 अरब अमरीकी डॉलर रहने की संभावना है और 2021 तक सीएजीआर के अनुसार यह 5 प्रतिशत की दर से वृद्धि करेगा। भारतीय कपड़ा उद्योग एवं वस्त्र उद्योग में लगभग 45 मिलियन लोगों को रोजगार मिला है, साथ ही इसके सहायक उद्योग में 60 मिलियन लोगों को भी रोजगार प्राप्त हुआ है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने छात्रों **के व्यावसायिक** पाठ्यक्रम की ओर बढ़ती हुई रूचि को देखते हुए इन पाठ्यक्रमों के विकास हेतु पहल की है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए फैशन डिजाइन गारमेंट तकनीक (एफडीजीटी) पर आधारित पेशेवर पाठ्यक्रम को कक्षा XIव XIIके छात्रों को एक विकल्प प्रस्तुत किया है कि वे या तो उच्च शिक्षा के लिये आगे सतत् शिक्षा प्राप्त करते रहें या अपनी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर फैशन उद्योग में एक उद्यमी के रूप में प्रवेश कर सकें इस पाठ्यक्रम में न सिर्फ किताबी ज्ञान को शामिल किया है अपितु उससे संबंधित कौशल पर भी ध्यान दिया है जो उक्त विशिष्**ट** उद्यम की मांग है। एफडीजीटी द्वारा संचालित पेशेवर पाठ्यक्रम में न केवल सैद्धांतिक

विषय को शामिल किया है वरन् यह छात्रों को परिधान प्रौद्योगिकी और फैशन डिजाईनिंग के क्षेत्र में पेशेवर दक्षता हासिल करने में समर्थता भी प्रदान करता हैं।

सीबीएसई के अधिकारियों व शिक्षकों, वरिष्ठ एनआईएफटी संकाय सदस्यों व छात्रों, तथा इस क्षेत्र के प्रसिद्ध उद्यमियों व निर्यातकों के मध्य विचार विमर्श के द्वारा ही इस विषय की विषय– वस्तु को तैयार किया गया है।

बोर्ड इस संबंध में श्री पी.के़ गेरा, आईएएस, महानिदेशक, एनआईएफटी व वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ बानी झा, प्रोफेसर डॉ वंदना नारंग– प्रोजेक्ट एंकर, प्रो. अनिता मेबल मनोहर एवं सुश्री नयनिका ठाकुर मेहता, निफ्ट के एसोसिएट प्रोफेसर्स का कक्षा XI के छात्रों के लिये सीबीएसई पाठ्यपुस्तक को तैयार करने में मूल्यवान समय व सहयोग का आभारी है। डॉ बिस्वजीत साहा, एसोसिएट प्रोफेसर व कार्यक्रम अधिकारी, व्यवसायिक शिक्षण प्रकोष्ठ, सीबीएसईऔर सुश्री स्वाति गुप्ता, सहायक प्रोफेसर व सहायक कार्यक्रम अधिकारी, व्यावसायिक शिक्षण प्रकोष्ठ, सीबीएसई और उसके अन्य सदस्यों के अथक प्रयासों के प्रति आभारी है।

पुस्तक के संदर्भ में पाठकों से किसी भी प्रकार के सुझावों और प्रतिक्रियाओं का सहर्ष स्वागत है ताकि उसे भविष्य के संस्करणों में समायोजित किया जा सके ।

आईएएस

अध्यक्ष, सीबीएसई

सीबीएसई

श्री विनीत जोशी, आईएएस, अध्यक्ष

डॉ. बिस्वजीत साहा ('एसोसिएट प्रोफेसर एवं कार्यक्रम अधिकारी')

सुश्री स्वाती गुप्ता ('सहायक प्रोफेसर एवं सहायक कार्यक्रम अधिकारी')

निफ्ट

सुश्री सरदा मुरलीधरन, आईएएस

वरिष्ठ प्रो. डॉ बानी झा हिन्दी

संपादक

एंकर

प्रो. डॉ वंदना नारंग

योगदानकर्ता

विषय वस्तु एवं प्रकल्पना

प्रो. (डॉ.) अनिता मैबल मनोहर
डॉ एम वसन्था एवं सुश्री गीता रामासामी

विषय सूची

अध्याय 1. परिधान संयोजन प्रणाली की प्रस्तावना

1.1 परिधान संयोजन प्रणाली

1.1.1 व्यक्तिगत प्रणाली

1.1.2 कारखाना उत्पादन प्रणाली

1.2 भारत में सामान्यतः प्रयुक्त परिधान संयोजन प्रणालियां

1.2.1 प्रोग्रेसिव बंडल प्रणाली (पीबीसी)

1.2.2 इकाई उत्पादन प्रणाली (यूपीएस)

1.2.3 मोड्यूलर उत्पाद प्रणाली (एमपीएस)

अध्याय 2 परिधान तैयार करने वाली मशीनें

2.1 लॉक स्टिच मशीन

2.2 चेन स्टिच मशीन

2.3 फ्लैट लॉक या सर्जिंग मशीन

2.4 सुरक्षा ओवर लॉक मशीन

2.5 ब्लाइंड स्टिच हैमिंग मशीन

2.6 बटन मशीन

2.7 बटन होल मशीन

2.8 फीड आफ आर्म सिलाई मशीन

2.9 पिन टकिंग मशीन

अध्याय 3 वस्त्र खपत और अनुमान

वस्त्र आवश्यकता

3.1 वस्त्र आवश्यकता का निर्धारण कैसे करें ?

3.2 पैटर्न लेआउट कैसे बनाएं?

3.2.1 शर्ट

3.2.2 पैंट

3.2.3 सलवार

3.2.4 कमीज

3.2.5 कलीदार कुर्ता

3.2.6 पजामा

3.2.7 चूड़ीदार पजामा

3.2.8 साड़ी ब्लाउज

3.2.9 स्कर्ट

3.2.10 नाइटी

अध्याय 4 परिधानों में अभिकल्प तत्वों का निर्माण

4.1 प्लेकेट्स के विभिन्न प्रकार

4.1.1 सतत प्लेकट्स

4.1.2 डायमंड प्लेकट्स

4.1.3 साधारण शर्ट प्लेकट्स

4.1.4 चिप्पल और चुनर के साथ शर्ट प्लेकट्स

4.2 बटन लगाना

4.3 विभिन्न प्रकार की जेबें

4.3.1 बाहरी जेब/ पैच जेब

4.3.2 इन सीम जेब

4.3.3 वेल्ट जेब

4.3.4 चीर और जोड़ की अवधारणा

4.4 कॉलर चिप्पल

4.4.1 तिरछी पट्टी तैयार करना

4.4.2 विस्तारित चिप्पल/ तिरछी बांधना

4.4.3 तिरछा चिप्पल

4.4.4 आकारित चिप्पल (श्लेश कॉलर)

4.4.5 कॉलर जोड़ना

4.5 बाजू जोड़ना

4.6 कफ लगाना

4.6.1 एक टुकड़े वाला सीधा कफ

4.6.2 कमरबंध जोड़ना

4.7 जोड़ जोड़ना

अध्याय 5 कुरती/ टॉप और स्कर्ट बनाना

5.1 टॉप/ कुरती का संयोजन

5.2 स्कर्ट बनाना

5.2.1 स्कर्ट कमरबंध बनाना

अध्याय 6 सलवार और कमीज / कुरती बनाना

6.1 सलवार बनाना

6.2 कमीज / कुरती बनाना

अध्याय 7 चूड़ीदार और कलीदार कुरता बनाना

7.1 चूड़ीदार बनाना

7.2 कलीदार कुरता बनाना

7.2.1 कुरता पलैक्ट

अध्याय 8 साड़ी ब्लाउज और चोली ब्लाउज बनाना

8.1 साड़ी ब्लाउज बनाना

8.1.1 साड़ी ब्लाउज पलैक्ट बनाना

8.2 चोली ब्लाउज बनाना

अध्याय 1

परिधान संयोजन प्रणाली की प्रस्तावना

परिधान संयोजन

अधिकतर लोग जो घर पर कपड़े सिलते हैं या जिन्होंने अपनी मां, दादी, चाची या दर्जी को कपड़े सिलते हुए देखा है, वे जानते हैं कि परिधान को विभिन्न घटकों जैसे कपड़ों के टुकड़ों, धागा, बटन, जिप और इत्यादि को एक साथ संयोजित कर तैयार किया जाता है!

परिधान निर्माण में सहायक सामग्री को सिले और पहने जाने वाले कपड़ों के रूप में परिवर्तित किया जाता है। यह कपड़ों और फैशन डिजाइन की मूल आवश्यकता है। परिधान निर्माण में दो–आयामीय डिजाइन/ पैटर्न /वस्त्र से तीन आयामीय परिधान को निर्मित करना सम्मिलित होता है।

परिधान के विभिन्न भागों, जैसे शर्ट के लिए पूरे परिधान का संयोजन आवश्यक होता है । अगला और पिछला भाग, बाजू, कफ, पलैक्ट, जोड़, कॉलर और पॉकेट को एक साथ संयोजित कर शर्ट बनायी जाती ळें

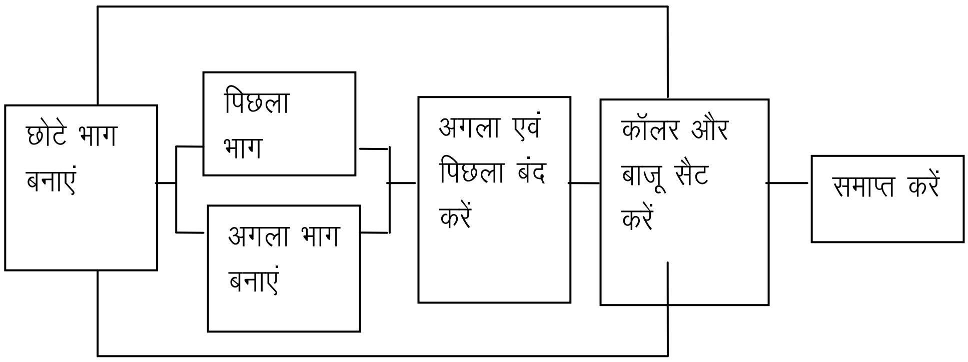

चित्र 1: लेआउट और कार्य चरण

1.1 परिधान संयोजन प्रणाली

किसी व्यक्ति या छोटी दर्जी दुकानों में प्रयुक्त परिधान संयोजन प्रणाली कारखानों में प्रयुक्त प्रणालियों से भिन्न होती है। कारखानों में उत्पादन प्रणाली, परिधान निर्माण के लिए उत्पादन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है और इसके सभी संघटकों को साथ किया जाता है। ग्लॉक और कुंज (1995) के अनुसार मूल परिधान संघटकों में सम्मिलित हैः

- टॉप का अगला और पिछला भाग
- बॉटम का अगला और पिछला भाग
- बाजू
- कॉलर और गला
- कफ और बाजू
- पलैक्ट
- जेब
- कमरबंध

किनारे, स्टिच, टांके, बांधना, मिलाना या इनके संयोजन का प्रयोग कर परिधान संघटकों को पूर्ण रूप दिया जाता है। किसी परिधान के जितने संघटक अधिक होंगे, उतना ही उसका संयोजन जटिल और श्रम लागत अधिक होगी।

1.1.1 व्यक्तिगत प्रणाली

यह परिधान सिलाई और संयोजन की पारंपरिक विधि है, जिसमें एक प्रचालक संपूर्ण परिधान को एक साथ तैयार करता है। प्रचालक कपड़े को काटता है और परिधान निर्माण हेतु प्रत्येक प्रचालन करता है, इसमें मशीन, हाथ और प्रेस कार्य सम्मिलित हैं। प्रचालन अपनी कार्यविधि के अनुसार परिधान सिलता है। इस प्रकार की परिधान संयोजन प्रणाली छोटी मात्रा में परिधानों के प्रकारों को तैयार करने में प्रभावी होती है। परिधान संयोजन की व्यक्तिगत प्रणाली, गृहणियों, स्थानीय दर्जियों, बूटिक इत्यादि में अधिक प्रयुक्त होती है।

1.1.2 कारखाना उत्पादन प्रणाली

परिधान संयोजन के लिए कपड़ा कारखानों में अनेक तरीके प्रयोग किए जाते हैं। श्रेष्ठ संयोजन प्रणाली का निर्धारण कंपनी उत्पाद और उत्पादन एवं मूल्य निर्धारण नीतियों के अनुसार किया जाता है। कपड़ा कारखानों में प्रयुक्त अधिकतर परिधान संयोजन प्रणालियां निम्नांकित हस्त या यांत्रिक प्रणालियों से उत्पन्न हुई हैं। प्रत्येक प्रणाली के अपने स्वयं के लक्षण होते हैं।

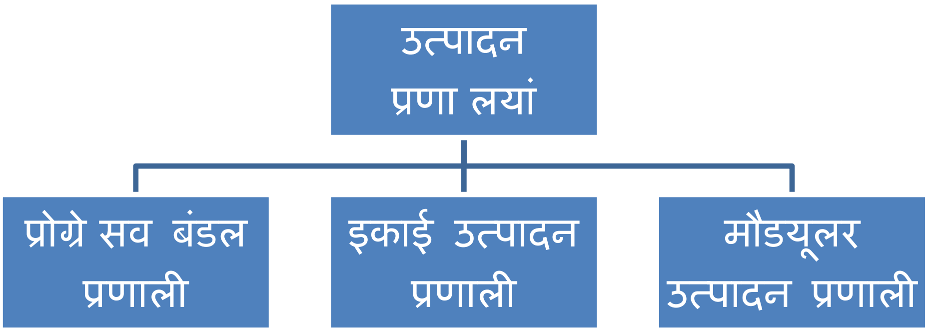

चित्र 1 उत्पादन प्रणाली

1.2 भारत में सामान्यतः प्रयुक्त परिधान संयोजन प्रणालियां

भारत में बड़े स्तर पर वस्त्र निर्माण के लिए सामान्यतः तीन परिधान संयोजन प्रणालियां प्रयुक्त होती हैं। प्रत्येक प्रणाली के लिए उपयुक्त प्रबंधन सामग्री रख रखाब विधियां, मशीन व्यवस्था और कर्मचारी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कारखाने किसी एक प्रणाली, एक उत्पाद हेतु प्रणालियों का संयोजन या अपनी विशिष्ट उत्पादन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समान संयंत्र में भिन्न उत्पादों हेतु भिन्न प्रणालियों का प्रयोग कर सकते हैं। ये प्रणालियां हैं:

1. प्रोग्रेसिव बंडल प्रणाली

2. इकाई उत्पादन प्रणाली

3. मोड्यूलर उत्पादन प्रणाली

1.2.1 प्रोग्रेसिव बंडल प्रणाली (पीबीएस)

प्रोग्रेसिव बंडल प्रणाली में परिधान भागों के बंडलों को क्रम में एक प्रचालन से दूसरे में ले जाया जाता है। प्रचालक किसी एक मुख्य संघटक में विशेषज्ञता रखते हैं और इसे प्रारंभ से लेकर अंत तक सिलते हैं। परिधानों को क्रमिक रूप में संयोजित किया जाता है और यह बंडल रूप में क्रमिक उप संयोजन और मुख्य संयोजन प्रचालनों से गुजरता है। इस प्रणाली को प्रायः पारंपरिक उत्पादन प्रणाली के रूप में संदर्भित किया जाता है और अनेक दशकों से यहां तक कि आज भी अनेक परिधान विनिर्मताओं द्वारा इसका बड़े स्तर पर प्रयोग किया जाता है।

बंडलों को कटाई कक्ष में संयोजित किया जाता है, जहां काटे गए भागों को संगत भागों और बंडल टिकटों के साथ मिलाया जाता है। कटे भागों के बंडल को सिलाई कक्ष में परिवहनित किया जाता है और प्रचालन पूरा करने के लिए अनुसूचित प्रचालक को दिया जाता है।

बंडल परिधान भागों से बनता है, जिसकी आवश्यकता किसी विशिष्ट प्रचालन या परिधान संघटक को पूरा करने के लिए होती है। उदारहण के लिए जेब लगाने हेतु बंडल में शर्ट के अगले भाग और जेबों को जोड़ना सम्मिलित हो सकता है। कोई प्रचालक, बंडल में सभी भागों पर समान प्रचालन कर सकता है, सब बंडलों को बांध, कूपन प्रक्रिया और इसे अगले प्रचालन में जाने तक अलग रख सकता है।

परिधान संयोजन की इस प्रणाली के अंतर्गत सिलाई कक्ष में अनेक भाग होंगे, प्रत्येक भाग में बहुमुखी प्रचालक विशिष्ट संघटक हेतु आवश्यक प्रचालन करने में दक्ष होगा।

कफ	कफ किनारे	बटन किनारे	संयोजन ।।
	कफ दाईं ओर	काटें दाईं ओर	
	कफ टर्न / ट्रिम	कफ समाप्त	
बाजू	खुले बाजू	कफ सेटिंग	
	बाजू पीएलके जोड़ना	कफ सेटिंग	
	बाजू पीसीके समाप्त (ब)	साइड टॉप स्टिच	
	बाजू पीसीके समाप्त (ग)	साइज जोड़ना	
कॉलर	कॉलर दाईं ओर	बाजू टी/एस	संयोजन।
	कॉलर टर्न	बाजू जोड़ना	
	कॉलर टॉप आयरन	बाजू सेटिंग	
	कॉलर टी/एस	कॉलर समाप्त	
	किनारा उठाएं	कॉलर समाप्त	
	जोड़ उठाएं	कॉलर जोड़ना	
	कटिंग उठाएं	कॉलर सेटिंग	
	आयरन उठाएं	कंधा टी/एस	
अगला भाग	जेब किनारा	कंधा जोड़ना	
	जेब अंकन	कंधा जोड़ सैट	अगला
	जेब आयरन	जेब जोड़ना	
	अगला बटन पीएलके किनारा	पिछला वाईसीकेई लेबल	पिछला
	अगला काज पीएलके किनारा	पिछला वाईसीकेई टी/एस	
	अगला फ्लैक्ट फ्यूजिंग	पिछला वाईसीकेई जोड़ना	

चित्र 3ः प्रोग्रेसिव बंडल प्रणालियां

प्रोग्रेसिव बंडल प्रणाली कुछ हद तक जटिल है और इसके प्रचालन हेतु बड़ी मात्रा में कार्य की आवश्यकता होती है। तथापि, बड़ी मात्रा में उत्पादन किया जाना हो तो यह सबसे स्थिर प्रणालियों में से एक है। इस प्रणाली की एकमात्र कमी यह है कि यह किसी अनुपस्थिति या लंबी अवधि तक मशीन खराब रहने के कारण बुरी तरह प्रभावित हो सकती है।

1.2.2 इकाई उत्पादन प्रणाली (यूपीएस)

इकाई उत्पादन प्रणाली (यूपीएस) एक प्रकार का संयोजन रेखा लेआउट है, जिसमें परिधान संघटकों को परिधान संयोजना हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए **शरोपरी** परिवहन का प्रयोग किया जाता है। एकल परिधान के सभी भागों को हैंगिग कैरियर द्वारा उत्पादन पंक्ति में आगे भेजा जाता है, जो **शरोपरी** पट्टी पर चलता है। प्रचालन पूरा होने पर प्रचालक बटन दबाता है और कैरियर अगले प्रचालन पर चला जाता है। अधिकतर इकाई उत्पादन प्रणालियां कंप्युटर नियंत्रण केन्द्र से जुड़ी होती हैं, जो उत्पादन पर नजर रखता है और प्रबंधन निर्णयों हेतु हर पल के आंकड़े प्रदान करता है। इस प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए उचित योजना की आवश्यकता होती है।

इकाई उत्पादन प्रणाली एक पूर्ण उत्पादन के सभी टुकड़ों को विनिर्माण प्रक्रिया द्वारा परिवहित करती है। कैरियर एक संपूर्ण इकाई (अर्थात् पैंट, पिछली, अगली जेब इत्यादि हेतु) के सभी भागों को उत्पादन के भिन्न चरणों से **गुजरता** है। प्रचालन व्यक्तिगत कार्य स्थलों पर किये जाते हैं । इसका अंतिम परिणाम टुकड़ों से पूर्ति तक एक लागत प्रभावी उत्पाद निर्माण है।

इस प्रकार की प्रणाली की मुख्य विशेषताएं हैंः

- उत्पादन की इकाई एकल परिधान है और बंडल नहीं है।

- परिधान संघटकों को पूर्व निर्धारित क्रम के अनुसार एक कार्यस्थल से दूसरे कार्यस्थल में स्वतः परिवहनित किया जाता है।
- तैयार उत्पाद को उतारने के बाद केंद्र पर पहुंचाया जाता है।
- खाली उत्पाद कैरियर लदान केन्द्र पर वापस आता है।

इकाई उत्पादन प्रणाली में पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है, जिसे प्रायः पारंपरिक प्राप्ति परिकलनों द्वारा पुष्ट नहीं किया जा सकता । तथापि, यूपीएस के अनेक लाभ हैं जैसे कार्य का क्रमिक और नियंत्रित बहाव और कंप्यूटर की सहायता से उत्पादन स्थिति के लिए दक्षता का कुछ समय पूर्व पता लगाने की विशेषता। यह प्रणाली कपड़ा कारखाने को किसी परिवर्तन के संबंध में तुरंत अनुक्रिया करने की क्षमता प्रदान करती है।

1.2.3 मोड्यूलर उत्पादन प्रणाली (एमपीएस)

यह प्रणाली संयोजन की दल विधि पर केंद्रित है। दल के सदस्य किसी संपूर्ण परिधान या संयोजन प्रक्रिया के किसी विशिष्ट प्रचालन के लिए उत्तरदायी होते हैं, जो समग्र उत्पादन संयंत्र और संघटकों की संख्या पर निर्भर करता है।

दल को आवश्यक कार्यों के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और कुल निर्गम के आधार पर दल के रूप में भुगतान किया जाता है। दल सदस्य व्यक्तिगत मशीनों को प्रचा लत करते हैं और पृथक कार्य करते हैं, परंतु वे अपनी अंतिम प्राप्ति हेतु एक साथ कार्य करते हैं। इन्हें एक दूसरे के कार्यों में भी प्रशिक्षित किया जाता है जिससे कंपनी को कोई उत्पादन हानि न हो।

एमपीएस एक दक्ष परिधान संयोजन प्रणाली है, चूंकि यह उत्पादन समय को कम और गुणवत्ता को बढ़ाती है। चूंकि कामगार भिन्न कार्य करते हैं, इसलिए कार्य एकरसता में कमी आती है और कार्य दक्षता बढ़ती है।

अभ्यास

किसी परिधान उत्पादन क्षेत्र का दौरा करें और वहां अनुसरित की जा रही उत्पादन प्रणाली की पहचान करें। वहां परिधानों के निर्माण के लिए प्रयोग की जा रही प्रक्रिया पर एक लघु रिपोर्ट लिखें। रिपोर्ट में निम्नलिखित सूचना सम्मिलित होनी चाहिएः

- निर्माण किए जा रहे उत्पाद
- सिलाई मशीनों और प्रचालकों की संख्या
- प्रतिदिन कुल उत्पाद
- प्रबंधन द्वारा उत्पादन प्रणाली में परेशानियां और उपलब्धियां।

रिक्त स्थानों को भरें

1. श्रेष्ठ संयोजन प्रणाली कंपनी के .... और .... पर निर्भर करती है।

2. .... प्रणाली में प्रचालक को एक मुख्य संघटक में विशेषज्ञता होती है और वह इसे प्रारंभ से लेकर अंत तक सिलता हैं।

3. इकाई उत्पादन लागत (यूपीएस) में किसी एकल परिधान के सभी भागों को .... द्वारा उत्पादन पंक्ति के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है, जो .... के साथ परिवहन करता है।

4. .... प्रणाली में पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है।

5. मोड्यूलर उत्पादन प्रणाली .... पर ध्यान केंद्रित करती है।

अध्याय 2

परिधान तैयार करने वाली मशीनें

हमने पहले परिधानों की सिलाई हेतु लॉक–स्टिच मशीन के बारे में पढ़ा था। जब परिधान निर्माण को औद्योगिकृत किया गया तो बृहद उत्पादन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशिष्ट प्रचालनों हेतु विशिष्ट मशीनें विकसित की गईं। ये प्रचालन ओवर लॉकिंग, सिलाई बटन, बटनों में छेद करना, प्लिट्स बनाना और पिन टक इत्यादि है।

इस पुस्तक में बाजार में उपलब्ध मशीनों की एक व्यापक समीक्षा की जा सकती है, परंतु निम्नांकित मशीनें कपड़ों के निर्माण में व्यापक स्तर पर प्रयोग की जाती हैं।

2.1 लॉक स्टिच मशीन

लॉक स्टिच मशीन सीधे टांकें लगाती है, इसमें ऊपरी धागा निचले धागे के नीचे से फिरकी के पास लॉक निर्मित करता है। यह सबसे सुरक्षित संभव स्टिच है । परंतु इससे कुछ अपूर्ण टांकें रह जाते हैं, जो अवांछित रूप से वस्त्र को आसानी से खराब करते हैं। इसके अलावा फिरकी को भरने के लिए प्रचालनों को बार–बार रोकना पड़ता है।

2.2 चेन स्टिच मशीन

चेन स्टिच मशीन कढ़ाई के समान सिद्धांत पर कार्य करती है; यह एक दूसरे से होते हुए लूप श्रृंखला निर्मित करती है। सूई का अग्र भाग वस्त्र के अंदर और बाहर जाता है, जो नीचे लूप का निर्माण करता है। चेन स्टिच, लॉक स्टिच की तरह सुरक्षित नहीं है क्योंकि धागे को खींचने पर टांका आसानी से खुल जाता है। तथापि, चूंकि लॉक स्टिच मशीन में फिरकी नहीं होती है, इसलिए प्रचालक को प्रचालन के बीच में इसे भरने के लिए रूकना नहीं पड़ता है। चेन टांका, टांकों को लचीलापन भी प्रदान करता है।

चित्र 4: चेन स्टिच मशीन

2.3 फ्लैट लॉक या सर्जिंग मशीन

फ्लैट लॉक या सर्जिंग मशीन चेन स्टिच मशीन के सिद्धांत पर ही आधारित है और लॉक स्टिच की तरह ही सुरक्षित नहीं है। इसे टांके सिलने सहित किनारे तैयार करने के लिए निर्मित किया गया था। यह एक प्रचालन में वस्त्र को सिलती, वस्त्र को काट कर साफ किनारा और किनारे के पास धागे को लपेटती है। एक सामान्य ओवर लॉक मशीन में एक सूई और दो लूपर (जो मुड़ी सुइयों के समान लगते हैं) होते हैं और यह धागे की तीन चरखियों या कोनों के साथ कार्य करता है। सूई और लूपर एक दूसरे के साथ उलट में कार्य करती ह‍ें लूपर, सूई से वस्त्र किनारे के आगे पीछे जाता है। यह टांका सिलाई के लिए आदर्श है, क्योंकि यह कपड़े को खिंचाव प्रदान करता है।

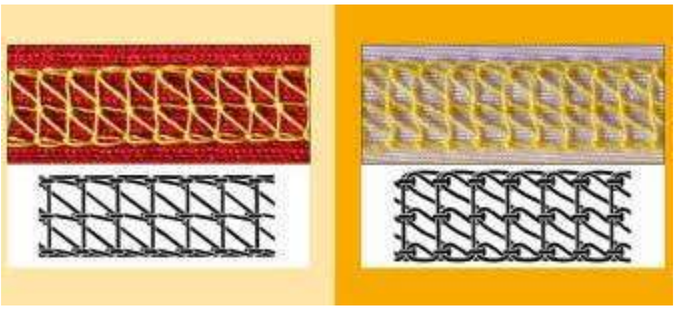

चित्र 5 : फ्लैट लॉक मशीन

2.4 सुरक्षा ओवर लॉक मशीन

सुरक्षा ओवर लॉक मशीन चेन स्टिच और ओवर लॉक का संयोजन है। इसका सुरक्षा कारक यह है कि यदि सिलाई की एक पंक्ति बाहर निकल जाती है तो दूसरी पंक्ति परिधान को जोड़कर रखती है। दो सूईयों, तीन लूपरों और धागों के पांच कोनों के साथ यह एक में दो मशीनों के रूप में कार्य करती है। यह किनारा तैयार करने सहित कारखाना संयोजन के लिए सीधा चेन टांका प्रदान करती है।

चित्र 6: सुरक्षा लॉक ओवर मशीन

2.5 ब्लांइड स्टिच हेमिंग मशीन

ब्लांइड स्टिच हेमिंग मशीन भी चेन स्टिच पर आधारित है। किनारे को पीछे मोड़ा जाता है और समान अंतरालों के बाद सूई द्वारा पकड़ा जाता है।

2.6 बटन मशीन

बटन मशीन परिधान में बटन लगाती है। वस्त्र पर बटन लगाने का स्थान अंकित किया जाता है। इस बटन सिलाई छेद को होल्डर पर रखा जाता है, जो बटन को आगे और पीछे ले जाता है, जबकि सूई नीचे के वस्त्र की सिलाई करती है।

दूसरी ओर, बटन डंडी से सूई गुजारी जाती है और यह डंडी के पीछे भाग से निकलती है।

चित्र 7: बटन मशीन

2.7 बटनहोल मशीन

बटनहोल मशीन अनिवार्यतः आड़ी तिरछी लॉक स्टिच मशीन है जिसमें बटनहोल की लंबाई और चौड़ाई को नियंत्रित करने के लिए और इसे काटने के लिए स्वचालित युक्तियां होती हैं।

चित्र 8: बटनहोल मशीन

2.8 फीड ऑफ आर्म सिलाई मशीन

यह एक औद्योगिक सिलाई मशीन है जो पैंटों और जीन्स, शर्ट और शर्ट बाजू जैसे सामान्य से बड़े ट्यूबनुमा भागों की सिलाई के लिए आदर्श है।

चित्र 9: फीड ऑफ ऑर्म सिलाई मशीन

2.9 पिन टकिंग मशीन

श्रेष्ठ पिन टक हल्के वस्त्र की बनी होती है, जैसे बेटिस्ट या लान। पिन टक का निर्माण दोहरी सूई और पिन टकिंग फुट के संयोजन का प्रयोग कर निर्मित किया जाता है (संदर्भ चित्र 10)

चित्र 10: पिन टक मशीन

कार्यकलाप

किसी परिधान कारखाने का दौरा करें और वस्त्र बुनाई हेतु प्रचालन में प्रयुक्त की जा रही मशीनरी के विभिन्न प्रकारों की पहचान करें।

खाली स्थानों को भरें

1. चेन स्टिच मशीन .... नियम पर कार्य करती है; यह एक–दूसरे में खींची .... की श्रृंखला बनाती है।

2. पिन टक को .... और .... पिन टकिंग फुट के संयोजन का प्रयोग कर तैयार किया जाता है।

3. बटनहोल मशीन अनिवार्यतः एक .... स्टिच मशीन है।

4. सुरक्षा ओवरलॉक मशीन कुल दो .... लूपरों और धागे के .... कोन का प्रयोग करती है और यह एक में दो मशीनों के रूप में कार्य करती है।

5. फीड ऑफ आर्म .... सिलाई मशीन है जो .... एवं .... जैसे सामान के .... भागों की सिलाई के लिए आदर्श है।

अध्याय 3

वस्त्र खपत और अनुमानन

वस्त्र आवश्यकता

किसी परिधान हेतु वस्त्र खरीदते समय हमारे मस्तिष्क में आने वाला एक मुख्य प्रश्न यह होता है कि कितना खरीदा जाए, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है और इसका वस्तुनिष्ठ उत्तर देने के लिए व्यक्ति को पैटर्न विकास और आर्थिक रूप से लेआउट बनाने का विशेषज्ञ होना चाहिए। परिधान उद्योग के लिए इसकी बहुत महत्ता है। यहां तक कि एक शर्ट में 5 सेमी कपड़े की बचत से 1000 शर्टों में 50 मीटर कपड़े की बचत होगी। 80 रूपए प्रति मीटर की दर से यह 4000 रूपए बचाएगा जोकि एक उत्पादक के लिए अच्छी खासी राशि होगी। सामान्यतया एक विशेषज्ञ परिधान में 25 से 30 से म० की बचत करता है और यह वस्त्र उद्योग के मापन क्षेत्र के लिए एक शर्ट हेतु काफी बड़ी बचत है।

ऐसी स्थिति की परिकल्पना कीजिए जहां हमें आवश्यक मात्रा में न्यूनतम 50 सेमी. अतिरिक्त कपड़ा खरीदना पड़े ताकि कटाई के समय वस्त्र की कमी न हो। अतिरिक्त वस्त्र पर व्यय की जाने वाली राशि, जो व्यर्थ होगी और फैंकी जाएगी या धूल छानेगी, काफी अधिक होगी।

3.1 वस्त्र आवश्यकता का निर्धारण कैसे करें?

किसी भी बनाए जाने वाले परिधान हेतु हमें दो मुख्य आयामों अर्थात् अधिकतम लंबाई और अधिकतम गोल चौड़ाई, को जानने की आवश्यकता होती है। किसी भी परिधान हेतु न्यूनतम दो लंबाइयों और जोड़ों की आवश्यकता होती है। वस्त्र की दो लंबाई भाग और चौड़ाई भाग होते हैं। परिधान को लंबाई–वार भाग के साथ लंबाई में काटना चाहिए चूंकि यह मजबूत भाग (जोकि आपने पिछले अध्याय में पढ़ा है) है और इस भाग पर परिधान का गिरना काफी बेहतर होगा। कपड़ा कम तभी कटेगा जब कपड़े की चौड़ाई इतनी हो कि इसमें वस्त्र की एक लंबाई में परिधान की दो लंबाई आ जाए।

परिधान के सभी टुकड़ों को प्रदर्शित करने वाले पैटर्न को एक साथ इस तरीके से प्रदर्शित करना चाहिए कि वे वस्त्र चौड़ाई में यथा संभव दक्षता से फिट हो जाएं। इससे वस्त्र की बर्बादी न्यूनतम होगी। यह पैटर्न रूप है।

3.2 पैटर्न लेआउट कैसे बनाएं?

उद्योग में यह एक विशिष्ट कार्य है जिस पर कपड़ा उद्योग हेतु विकास, पैटर्न निर्माण सॉफ्टवेयर पर काम करने वाली कंपनियां काफी लंबे समय से कार्य कर रही हैं और इन्होंने सफलतापूर्वक इस हेतु अनेक समर्पित नेटवर्क निर्मित किए हैं। कंप्यूटर कपर या तो परिधान के सभी टुकड़ों को डिजिटल या प्रारूपित किया जाता है और परिधान का खाका बनाया जाता है। वस्त्र के आयामों का आयत बनाया जाता है और इस पर पैटर्न के टुकड़े रखे जाते हैं और यह ठीक उसी तरह किया जाता है जैसा वस्त्र पर किया जाता है। इसमें इस बात का ध्यान रखा जाता है कि क्या टुकड़े को मोड, तिरछे या क्रास भाग पर काटा जाए। इस अभ्यास को छोटे माप के समान आयत को काटक आरेख बनाकर और छोटे माप पर पैटर्न टुकड़ों को रखकर या बनाकर किया जा सकता है। वस्त्र परिकलन हेतु यह अभ्यास और अधिक वैज्ञानिक, स्पष्ट और परिशुद्ध होगा। इसका एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

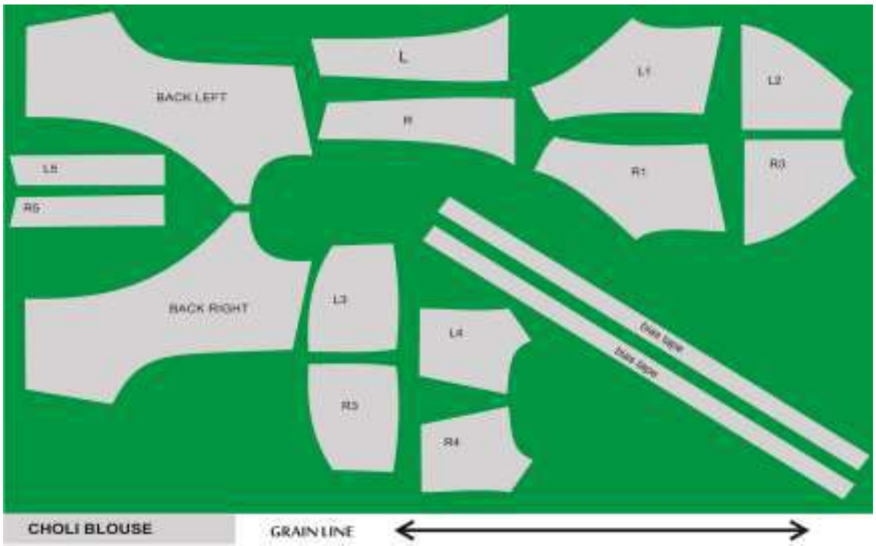

पैटर्न के सभी भागों को फिट करने में समय और प्रयास लगता है। यह एक कठिन पहेली को हल करने जैसा है। इसमें सभी पैटनों को इस ढ़ंग से **रखना** होता है ताकि इसकी संपूर्ण चौड़ाई और लंबाई को **कफायती** रूप में प्रयोग किया जा सके। ऐसे प्रयोजनों हेतु यह सलाह दी जाती है कि माप पर वस्त्र की मानक चौड़ाई के लिए लिपटाने वाले कागज की अनेक लंबाई तैयार रखी जाए।

वस्त्र को सपाट तल पर रखें। इसकी सीधे किनारों को कटाई तल के सीधे कोनों के साथ भेजें। पैटर्न को सही स्थान पर रखें। वस्त्र के एक कोने के साथ प्रारंभ करें। कटाई क्षेत्र के दूसरे कोने पर कपड़े के भार का समर्थन करें। जब पैटर्न टुकड़ों को अस्थायी रूप से सामग्री पर पिन किया जाता है तो यह देखना चाहिए कि क्या पैटर्न टुकड़ों को कुछ और वस्त्र **बनाने** के लिए समायोजित किया जा सकता है।

टुकड़ों को दाएं **कोने** पर एक दूसरे के निकट रखें। इनके मध्य खाली जगह के कारण पांच से छह इंच वस्त्र बर्बाद हो सकता है। हमेशा बड़े टुकड़े को पहले रखें, फिर इसके बाद जिस मोड़ पर काटा जाना है। आकारों को एक –दूसरे के साथ फिट करें और जब भी संभव हो लॉक करें। इससे काफी कपड़ा बचता है। पैटर्न टुकड़ों को इस तरीके से व्यवस्थित करें कि यदि कोई वस्त्र रह जाता है तो वह मध्य या अंत में से कही प्रयोग किया जा सके।

पैटर्न टुकड़ों को इस प्रकार रखें कि यह वस्त्र की निदेशात्मक विशेषताओं जैसे वस्त्र डिजाइन और वस्त्र ग्रेन को ध्यान में रखें। वस्त्र मिलान की परिशुद्धता द्वारा उत्पाद की गुणवत्ता काफी प्रभावित होती है, जिसे मिटरिंग कहा जाता है, जो चैक या स्ट्राइप वाले वस्त्रों के लिए महत्वपूर्ण है। 'मिटरिंग' चैक या स्ट्राइप का सटीक मेल है जो ओर टांकों, मध्य पश्च और केन्द्र अग्र टांका या किसी भी टांके के अन्य निदेशात्मक प्रिंट भी कार्य करता है, जो परिधान में एक जोड़ या कमर रेखा टांके की तरह हो । इसके लिए अधिक कपड़े की और समय एंव प्रयास की आवश्यकता होती है, यह डिजाइनर और मास्टर दर्जी के लिए एक पूर्ण परिधान गर्व और हर्ष का विषय है।

नीचे परिधानों की कुछ प्रसिद्ध श्रेणियों हेतु वस्त्र परिकलन **की** विधियां दी गयी हैं। इन्हें 36 इंच चौड़ाई वस्त्र के त्वरित प्रयोग अनुमान के आधार पर दिया गया है। यह केवल सूचक है और श्रेणी की मूल और पारंपरिक शैली में किया गया है और किसी भी ढ़ंग से अंतिम नहीं है, चूंकि यह आशा होगी कि प्रत्येक कदम पर इसे **व्यावहारिक** अभ्यास के साथ मिलाया जाएगा। यह एक व्यावहारिक विषय है और अभ्यास के साथ और अनुभव आएगा।

3.2.1 शर्ट

पुरूष की शर्ट के लिए वस्त्र खरीदने हेतु हमें शर्ट की लंबाई ज्ञात होनी चाहिए, छाती और बाजू की लंबाई (आधी या पूरी) ज्ञात होनी चाहिए। हमें इसके लिए शर्ट सहित **टांको** की दो लंबाईयों वाला वस्त्र टुकड़ा और एक टांके सहित बाजू की एक लबांई का वस्त्र खरीदना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि केन्द्र अग्र भाग को बाजू कोने पर रखा जाए, चूंकि इससे न केवल वस्त्र बचता है बल्कि एक प्रचालन भी बचता है, चूंकि पलैक्ट में एक तैयार कोना होगा। यदि कोई ऐसे वस्त्र से शर्ट बनाता है जिसमें एक ओर प्रिंट हो तो हमें शर्ट की न्यूनतम दो लंबाई और बाजू लंबाई की आवश्यकता होगी।

3.2.2 पैंट

पैंट सामान्यतः मोटे वस्त्र से बनायी जाती है जो अधिकतर 60 इंच से अधिक की चौड़ाई में उपलब्ध होता है । इसलिए हमें पैंट की लंबाई की एक वस्त्र टुकड़े जमा 25 सेमी. की आवश्यकता होगी, चूंकि पैंट की टांगों में 4 टुकड़े होंगे जिन्हें एक बार में दो में काटा जा सकता है, इसके लिए वस्त्र को आधी चौड़ाई में मोड़कर विपरित दिशाओं में रखना होगा। यदि ऐसे वस्त्र से पैंट बनाई जा रही हो जिसमें एक ओर प्रिंट हो तो पैंट की न्यूनतम दो लंबाइयों की आवश्यकता होगी।

3.2.3 सलवार

सलवार में टांगों और बेल्ट हेतु छह टुकड़े होते हैं। सलवार के चार टुकड़े इस ढ़ंग से काटे जाते हैं कि उन्हें विपरित दिशा में रखकर कोई वस्त्र बर्बाद न किया जाए। टांग के अन्य दो भाग और बेल्ट सामान्य **आयात** हैं परन्तु सलवार मूलतः पैंट से चौड़ी होती है। सलवार के लिए सलवार की दो लंबाइयों और एक सीट लंबाई के वस्त्र टुकड़े की आवश्यकता होती है, यदि आप एक ओर प्रिंट वाले वस्त्र पर सलवार बना रहे हैं तो आपको सलवार वस्त्र की न्यूनतम चार लंबाइयों की आवश्यकता होगी।

3.2.4 कमीज़

महिलाओं की कमीज़ सलवार के उपर पहनी जाती है। इसके लिए कमीज़ की दो लंबाइयों और एक बाजू लंबाई की आवश्यकता होती है। यदि फैशन में किनारे पर चुनटों की प्रवृत्ति हो तो दो से अधिक लंबाइयों की आवश्यकता होगी। यह आवश्यक पैनलों की संस्था की चौड़ाई पर निर्भर करेगा कि पैटर्न को डिजाइन अनुसार काटा जाए। यदि आप एक ओर प्रिंट वाले वस्त्र पर कमीज़ बना रहे हैं, तो मूल शैलियों के लिए अतिरिक्त कपड़े की आवश्यकता नहीं होगी परंतु किनारे में अधिक तड़क भड़क या राजकुमारी पैनल वाली कमीज़ के लिए अतिरिक्त लंबाई की आवश्यकता होगी।

3.2.5 कलीदार कुरता

कलीदार कुरते में अगले और पिछले भाग हेतु दो साधारण आयत होते हैं जिसमें टांका जमा कुरते की लंबाई द्वारा टांका जमा क्रास पिछले भाग का आकार होगा। इसमें दो बाजू होते हैं, जिनकी लंबाई डिजाइन पर निर्भर करती है और सामान्यतः चार कली होती है। कली को सलवार ओर पैनलों के समान ही काटा जाता है। सामान्यतः कली को कुरते में बाजू के बाद जोड़ा जाता है, परंतु कुछ डिजाइनों में कंधों से भी प्रारंभ किया जा सकता है। यदि वस्त्र की चौड़ाई पर्याप्त हो (कली की चौड़ाई पर आधारित), आपको कुरते की एक लंबाई, कली की एक लंबाई और बाजू की एक लंबाई की आवश्यकता होगी। अन्यथा, आपको कुरते की दो लंबाइयों और कली की एक लंबाई की आवश्यकता होगी। यदि कली संख्या अधिक होगी तो वस्त्र की आवश्यकता समानुपात में बढ़ जाएगी।

3.2.6 पज़ामा

पजामा अपने पैटर्न में पैंट की ही तरह है, परंतु यह आराम हेतु काफी चौड़ा होता है। इसके लिए सामान्यतः टांकों सहित पजामा की दो लंबाइयों के बराबर वस्त्र टुकड़े की आवश्यकता होती है।

3.2.7 चूड़ीदार पजामा

यह साधारण पजामे की तरह होता है जिसकी लंबाई अतिरिक्त होती है, जो पहनने वाले के टखने के निकट होता है। इस पजामे को बेहतर फिट के लिए तिरछा काटा जाता है। इसके लिए पहनने वाले की अपेक्षित लंबाई से 2.5 गुना अधिक की आवश्यकता होती है। (यह व्यक्ति के मापन और पजामे पर निर्भर नहीं करेगा)।

3.2.8 साड़ी ब्लाउज

साड़ी ब्लाउज के लिए ब्लाउज की एक लंबाई और टांके सहित एक बाजू लंबाई वस्त्र टुकड़े की आवश्यकता होती है। बड़े आकार के मामले में ब्लाउज की दो लंबाइयों की आवश्यकता होगी। चूंकि साड़ी ब्लाउज सामान्यतः 2x2 रूबिया से बनता है, जो 36 इंच चौड़ाई में आता है।

3.2.9 स्कर्ट

स्कर्ट में सामान्यतः एक पिछला भाग, एक अगला भाग और कमरबंध होता है। आपको स्कर्ट की दो लंबाइयों के बराबर वस्त्र की आवश्यकता होगी। स्कर्ट में डिजाइन अंतर की अपार संभावनाएं हैं। इसलिए अधिक तड़क – भड़क, अधिक पैनल विभिन्न फिट और प्लीट या गेदर वाली मोड़ की स्कर्टों हेतु सामान्यीकरण संभव नहीं है। स्कर्ट में प्लीट या गेदर की संख्या सामान्यतः वस्त्र की आवश्यकता को निर्धारित करती है।

3.2.10 नाइटी

यह शर्ट के समान है, आपको नाइटी की दो लंबाइयों और एक बाजू लंबाई की आवश्यकता है। उपरोक्त सूचक मापन और आवश्यकताएं है। यह सिफारिश की जाती है कि हमें पैटर्न लेआउट सीखना चाहिए। जैसाकि प्रारंभ में वर्णित किया गया है लेआउट वस्त्र को वास्तविक रूप में काटने जैसी समान प्रक्रिया है, वस्त्र परिकलन के लिए वास्तविक कपड़े की तरह ही आवश्यकता टुकड़ों के साथ काल्पनिक वस्त्र के लिए लेआउट बनाने की आवश्यकता होगी।

नए काम करने वालों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह सामान्य कार्य के लिए इसे सीखें और बाद में अधिक जटिल की ओर बढ़े। विभिन्न चौड़ाइयों के साथ वस्त्र का परिवर्तन चार्ट तैयार किया गया है और 36 इंच चौड़ाई (भारतीय बाजार में उपलब्ध सबसे सामान्य चौड़ाई) में परिधान हेतु आवश्यक वस्त्र का परिकलन करने के बाद इसे प्रयोग किया जाए। प्रारंभ करने वाले को न्यूनतम 25 सेमी. अतिरिक्त खरीदना चाहिए, चूंकि केवल अनुभव के बाद ही आर्थिक लेआउट और सटीकता आती है। दूसरा कारण यह है कि प्रारंभकर्ता द्वारा कुछ गलतियां हो सकती हैं, जैसे मार्किंग या दाएं भाग या आयाम को काटने में और इससे वस्त्र की कमी हो सकती है। अनुभव प्राप्त करने के बाद कुछ जटिल लेआउट बनाने चाहिए जिससे आत्मविश्वास बढ़े।

कार्यकलाप

36'' और 44'' वस्त्र की दो भिन्न चौड़ाइयों का प्रयोग कर सलवार और कलीदार कुरते के लिए आवश्यक वास्तविक वस्त्र मात्रा का परिकलन करें।

खाली स्थानों को भरें

1. पैटर्न प्रदर्शन .... के सभी .... परिधान को इस ढ़ंग में प्रदर्शित करता है कि ये वस्त्र चौड़ाई की .... सीमा के भीतर रहें।

2. .... से वस्त्र की बर्बादी न्यूनतम होती है, जिसमें .... को यथासंभव प्रभावी ढ़ंग से रखा जाता है।

3. स्कर्ट में .... की राशि या .... की संख्या सामान्यतः आवश्यक वस्त्र का निर्धारण करती है।

4. पजामे के लिए पजामा जमा टांके के.......................... के बराबर वस्त्र होती है।

5. सलवार के ओर टांग भागों को .... दिशा में रखकर वस्त्र की बर्बादी को .... रखकर सबसे .... ढ़ंग में काटा जाता है।

अध्याय –4

परिधानों के डिजाइन तत्वों का निर्माण

4.1 पलेक्टों के विभिन्न प्रकार

अधिकतर परिधानों को पहनने और खोलने हेतु खुली जगह चाहिए होती है। इस खुली जगह का स्थान भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। सामान्यतः परिधान का खुला स्थान मध्य अगले, मध्य पिछले, ओर टांका, कंधा, बाजू इत्यादि में होता है।

पलेक्ट, किसी परिधान या परिधान के भाग का तैयार क्षेत्र है। पलेक्ट को पर्याप्त लंबाई में डिजाइन और तैयार करना चाहिए जिससे पहनने में सुविधा और आसान हो। इन्हें जिपर की बजाए गले के अगले या पिछले भाग में बनाया जाता है। पलेक्ट को बटन होल, स्नैप और अन्य फास्टनरों को लगाने के लिए विस्तार से प्रयोग किया जाता है। पलेक्ट खुली जगह को बाजूओं पर प्रयोग किया जाता है जिससे संकरे भाग का विस्तार हो और जगह बने, जब कफ को खोला जाए।

चयनित पलेक्ट का प्रकार और लंबाई निम्नांकित पर निर्भर करती हैः

- पलेक्ट लगाने का स्थान
- पलेक्ट का कार्य
- परिधान का स्टाइल और डिजाइन
- परिधान का प्रयोग
- वस्त्र का प्रकार और भार
- परिधान का ध्यान
- निर्माण विधि

4.1.1 सतत पलेक्ट

इस प्रकार का पलेक्ट बनाना आसान है और पुरूष एवं महिला दोनों के परिधानों में अनेक प्रकार के डिजाइनों का आधार है। यह एक टुकड़ा पलेक्ट है, जिसे कफ बाजू खुले स्थान के लिए व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है ताकि हाथ बाजू परिधि ब्लूमर और बच्चों के कपड़ों, स्कर्ट और जिपर में फिट हो सके, जहां जिपर अनुप्रयोग परिधान की अपील कम करेगा और अन्य फास्टनर या बंद स्थानों के लिए वैकल्पिक गलारेखा के रूप में कार्य करेगा।

आवश्यक पैटर्न टुकड़ा

तैयार पलेक्ट के खुले भाग की लंबाई से दोगुना टुकड़े की लंबाई हेतु पैटर्न टुकड़ा काटिए और 1'' अतिरिक्त जोड़िए। (बाइंडिंग पट्टी की 1'' अतिरिक्त लंबाई केवल आपात के लिए है। यदि मापन सटीक हो और पलेक्ट सही ढ़ंग से बनाया गया हो, तो यह मात्रा सही जगह पर टांका लगाने के बाद काटी जाएगी)। इस टुकड़े की चौड़ाई तैयार पलेक्ट चिप्पल की चौड़ाई से दोगुनी होगी (जोकि सामान्यतः 1 ओर हेतु 1/2'' है) और जमा दोगुना टांका (जोकि सामान्यतः 1/4'' है) होगा।

CONTINUOUS PLACKET

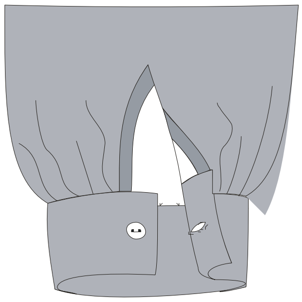

पेटर्न टुकड़े

2x तैयार भाग की लंबाई +1 इंच

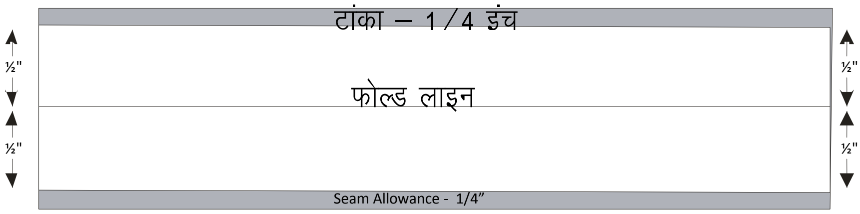

चित्र 11 सतत पलेक्ट

निर्माण चरण

1. पलेक्ट की दाईं ओर को खुली बाजू की गलत ओर रखें और किनारे के निकट टांके लगाना शुरू करें और 1/4'' की दूरी रखें। जैसे ही आप पलेक्ट के मध्य में आते हैं, पलेक्ट टुकड़े के टांके की दूरी 1/4'' रखें और परिधान टुकड़े की टांका दूरी को कम करें। ध्यान रखें कि इस स्थान पर कोई चुनट निर्माण न हो।

2. पलेक्ट के इस भाग (अन्य ओर) को मोड़े और इसे प्रथम सिलाई रेखा पर रखें। फिर बाजू की दाईं ओर से सिलाई करें। ध्यान रखें कि पिछले भाग पर समान सिलाई हो अर्थात् यदि यह टॉप पर हो जो इसे टॉप पर रखा जा सके और यदि यह डिच में तो इसे पूरे में बनाए रखें। अच्छी गुणवत्ता के पलेक्टों में यह टांका पिछले भाग के टॉप पर होता है।

3. बाजू की गलत ओर से, पलेक्ट के उपरी और निचले दोनों की सिलाई करें, इसे अंतिम कोने के 2 से 3 गुना विकर्ण (45 डिग्री पर) पर रखें। इसे बार ट्रेक कहा जाता है।

सतत शर्ट पलेक्ट

चित्र

CONTINUOS SHIRT PLACKET

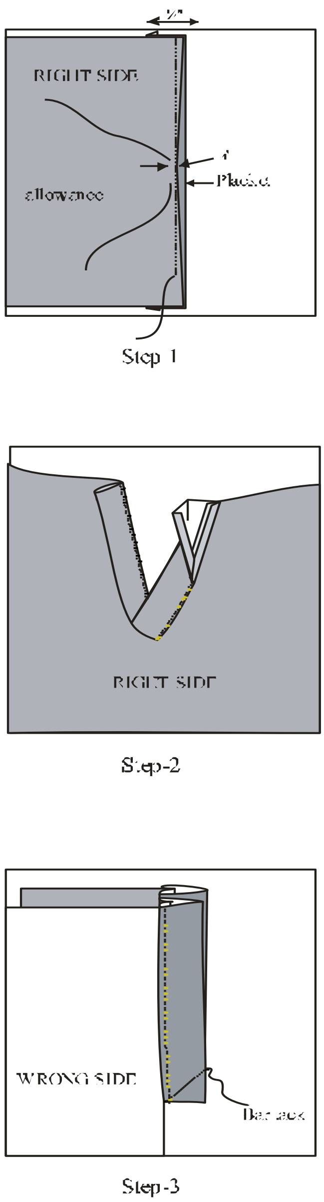

चित्र 12: सतत पलेक्ट निर्माण चरण 1,2,3

4.1.2 डायमंड पलेक्ट

असमान चौड़ाई की दो स्ट्रिपों वाला टैब डिजाइन, जिसमें खुली जगह के अनिर्णित कोने होते हैं। चौड़ी, टॉप सिली स्ट्रिप, संकरी स्ट्रिप और अपूर्ण कोने के उपर आती है।

- जब पलेक्ट की योजना डिजाइन ब्यौरे के रूप में बनायी जाती है।
- उपरी बंद के साथ बाजू और परिधान के खुले स्थान पर ।
- खेल शर्ट की बाजू पर खुला स्थान।
- जहां जिपर का प्रयोग न हुआ हो वहां स्कर्ट के खुले भाग पर।
- कुरता पलेक्ट।

टॉप सिला पलेक्ट भाग परिधान के अगले भाग को दिखाता है। पलेक्ट मजबूत और सपाट तैयार खुली जगह बनाता है।

पैटर्न टुकड़े

1. दो चिप्पलों को एक साथ बनाएं चिप्पल 1 और चिप्पल 2, प्रत्येक 1'' चौड़ा । एक 5'' लंबा होगा और अन्य 6.5'' लंबा होगा। टॉप पर 1/2'' की टांका दूरी अंकित करें और इसे कफ के साथ सिलें। यथा वर्णित शेष ओर पर 1/4'' दूरी अंकित करें।

2. अंडर पलेक्ट को बनाने के लिए 5''X1/2'' के चिप्पल आकार बनाएं और फिर इसके निकट समान आकार की अन्य चिप्पल बनाएं। सभी ओर 1/4 इंच की दूरी रखें, सिवाए टॉप जहां टांका दूरी 1/2 इंच होगी।

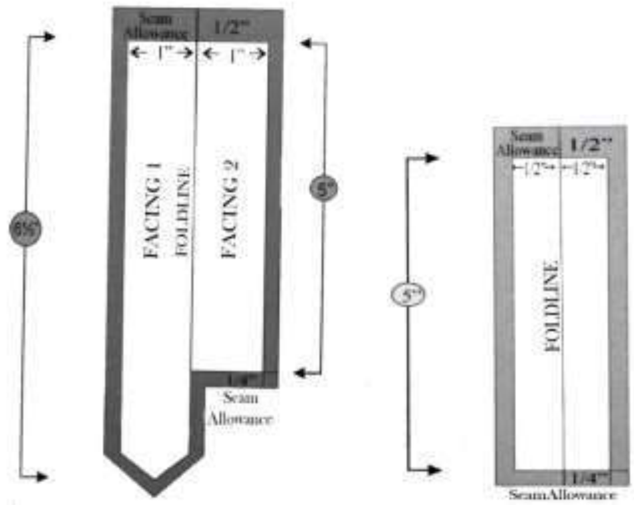

चित्र–13 : डायमंड पलेक्ट

निर्माण चरण

1. पलेक्ट की दाईं ओर को परिधान टुकड़े की गलत ओर रखें। परिधान और पलेक्ट की स्लैश रेखाओं को मिलाएं। पलेक्ट टॉप पर मजबूत टांके लगाएं, फिर कोनों पर जाएं। खुली जगह के अगले और पिछले कोनों का निर्धारण करें।

2. टांका रेखा संरेखण, पिन और दाईं ओर टांका के साथ अनिर्मित कोनों को पिछले पलेक्ट कोनों की गलत ओर रखिए। पलेक्ट के उपरी कोनों पर टांके लगाएं। फिर इसे दाईं ओर मोड़े, इसके मुड़े कोने को सिलाई रेखा के साथ पिन करें। सभी चौड़ाई में कोनों के माध्यम से टांका लगाएं। कोने पर रूकें और टांके लगाएं।

3. पलेक्ट टॉप पर त्रिकोणीय टुकड़े को गलत ओर घुमाएं और इसे लैप के नीचे पिन करें। त्रिकोण के आधार के नीचे सिलें, प्रारंभ और अंत में सिलाई सुनिश्चित करें। लैप के नीचे वर्ग कोनों को टेपर करें।

4. शेष पलेक्ट कोने की गलत ओर विस्तारित कोने को ओवरलैप के दाई ओर पिन करें। टांका लाइनों को संरेखित करें और निचले भाग पर अनिर्मित करें। टॉप पर टांके सुनिश्चित करें।

5. टांके को ओवरलेपर की ओर दबाएं । मुड़े कोनों को सिलाई रेखा के लिए लाएं और पिन लगाएं।

6. ओवरलेप के टॉप भागों के लिए पिन लगाएं और लैप के अंदर टॉप भाग को पिन करें, पलेक्ट कोने तक पिन लगाएं। सभी कोनों पर टांका लगाएं।

7. ओवरलेप के बिना लगाए भाग के साथ टॉप सिलें (सुनिश्चित करें सिलाई में कोई निचला भाग न आए) धागे को अंतिम बिंदु और गांठ की गलत ओर खींचे।

8. ओवरलेप और लगाए कोनों के आसपास टॉप सिलें (सभी चौड़ाई पर) संकेत का अनुसरण करें। प्रारंभ में टांके लगाएं, धागे हटाएं और दबाएं।

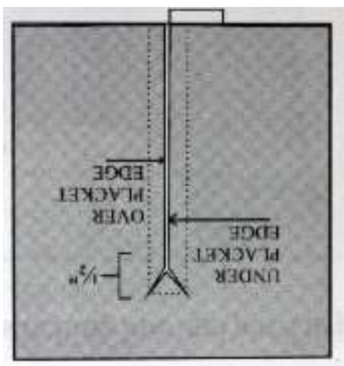

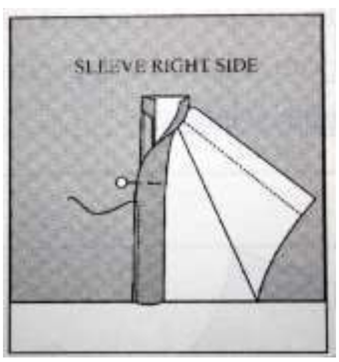

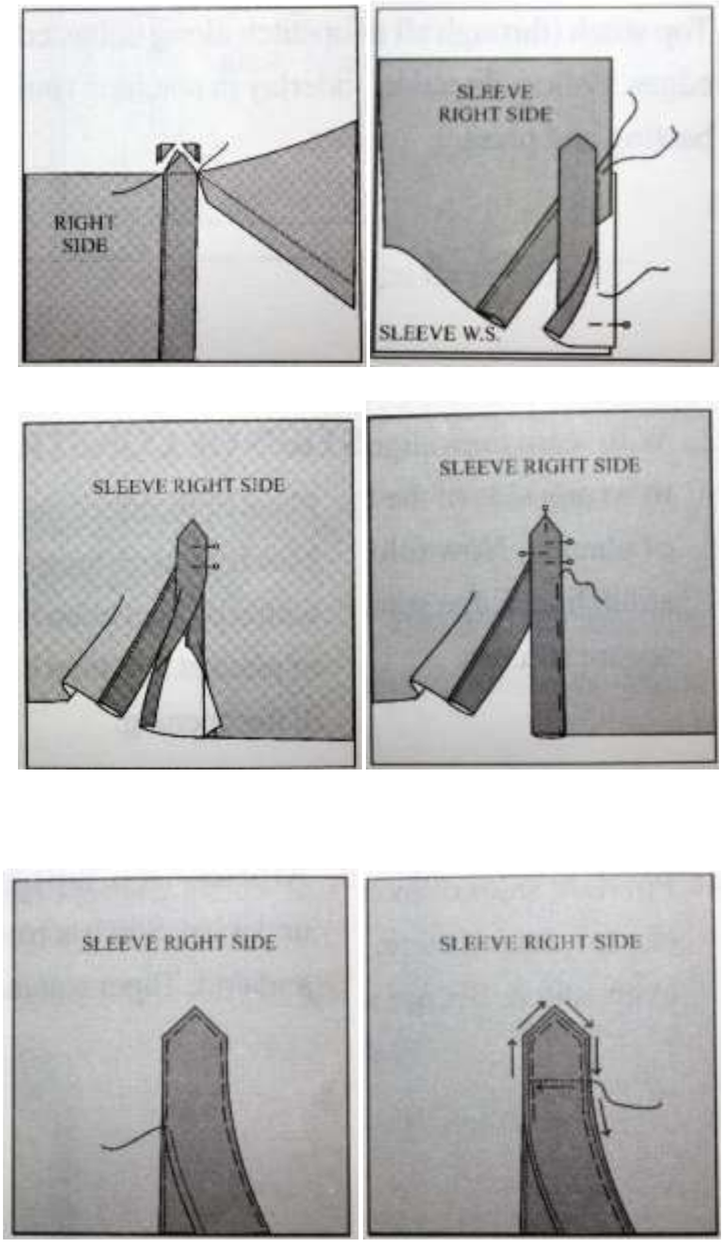

चित्र 14: निर्माण चरण

4.1.3 साधारण शर्ट पलेक्ट

पुरूष और महिला शर्टों का अगला भाग सामान्यतः खुला होता है। यह परिधान/परिधान के पैटर्न टुकड़े से बनता है। पुरूष शर्ट के लिए खुला भाग बाएं के उपर सीधे और महिलाओं के लिए दाएं के उपर बायां है।

दो पैटर्न टुकड़े आवश्यक है, एक उपरी भाग और दूसरी निचले भाग के लिए है।

उपरी भाग

कुरती को मध्य अगली रेखा तक अंकित करें। विस्तार को अंकित करें; जिसे बटन का आधा +1 सेमी. लिया जाता है अर्थात् बटन की त्रिज्या +1 सेमी. =विस्तार, या इसे बटन का व्यास माना जाता है। अन्यथा पुरूष की शर्ट को 1/2'' या 3/4 '' के मानक मान के साथ लिया जाता है।

विस्तार रेखा मोड़ रेखा है। इसके बाद 1.5'' की मानक चिप्पल की जाती है, 1/4'' की दूरी रखी जाती है। इस दूरी को चिप्पल को उलटी ओर घुमाएं। इसके बाद मोड़ रेखा को परिधान की उलटी ओर घुमाएं । (यदि चिप्पल को बाजू कोने के साथ संरेखित किया जाता है, जब इसे वस्त्र पर रखा जाता है तो कोई टांका दूरी नहीं रखी जाती।) । पैटर्न को काटिए।

निचला भाग

पैटर्न को उर्ध्वाधर धुमाएं, ट्रेस करें। निचला भाग उसी तरह बनाया जाता है, जैसे आप उपरी भाग को बनाते हैं, अंतर केवल चिप्पल का है जो 1'' है। अन्यथा निचले भाग की सिलाई रेखा पलेक्ट के आगे दिखाई देगी।

साधारण शर्ट पलेक्ट

पैटर्न टुकड़े

SIMPLE SHIRT PLACKET

PATTERN PIECES

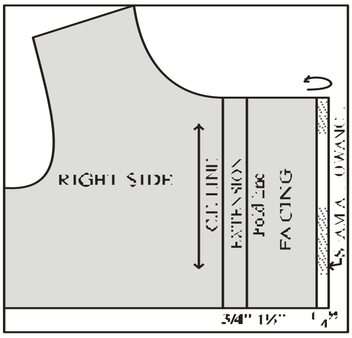

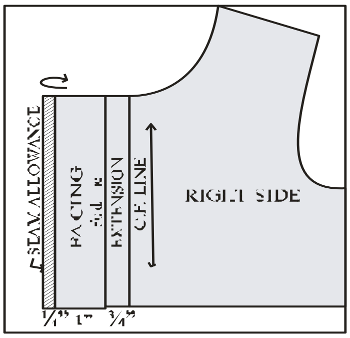

चित्र –15: साधारण शर्ट पलेक्ट

निर्माण चरण

उपरी भाग

1. वस्त्र के पैटर्न को ट्रेस करें और रेखाओं की स्थिति को अंकित करें।

2. इस दूरी को वस्त्र की उल्टी ओर घुमाएं। चिप्पल को भी इसी ढ़ंग से मोड़ रेखा से दूर ले जाएं अर्थात् वस्त्र की उल्टी ओर।

3. उल्टी ओर चिप्पल के कोने पर मशीन सिलाई यथा वर्णित करें।

निचला भाग

1. वस्त्र पर पैटर्न को ट्रेस करें और सभी रेखाओं की स्थिति अंकित करें।

2. इस दूरी को वस्त्र की उल्टी ओर घुमाएं । इसी प्रकार चिप्पल को भी घुमाएं।

3. उल्टी ओर चिप्पल के कोने पर मशीन सिलाई यथा वर्णित करें।

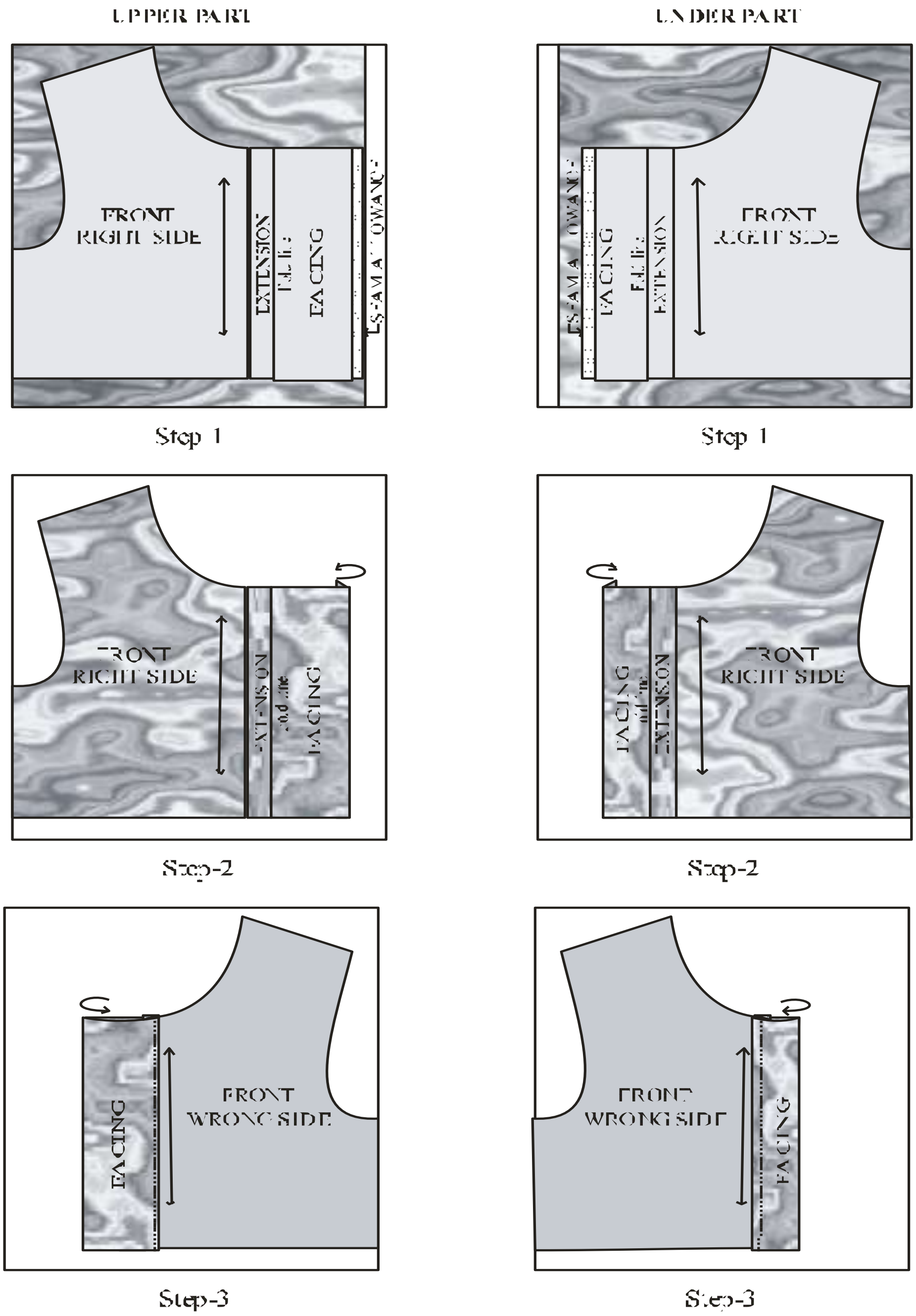

चित्र 16: साधारण शर्ट पलेक्ट उपरी और निचला भाग

4.1.4 चिप्पल और चुनट के साथ शर्ट पलेक्ट

कई बार शर्ट में डिजाइन ब्यौरे के रूप में विभिन्न रंग / वस्त्र में पलेक्ट हो सकते हैं। शर्ट के अगले भाग की दाईं ओर पर शर्ट बैंड/ स्ट्रिपर, जिसमें बटनहोल लगाए जाते हैं, यह चिप्पल हेतु आवश्यकता को समाप्त करता है। एक विस्तारित स्व–चिप्पल बाईं ओर प्रयोग किया जाता है। तैयार शर्ट बैंड 1.5'' चौड़ा है परंतु निर्माण तकनीकें शर्ट के वस्त्र और स्टाइल अनुसार भिन्न होंगी।

आवश्यक पैटर्न टुकड़े

निचला भागः कुरती का ट्रेस करें और 3/4'' का विस्तार करें, जो तैयार पलेक्ट का आधा होगा। इसके बाद 1/4 इंच की दूरी रखें।

चिप्पलः खुली पलेक्ट समान लंबाई की एक सीधी स्ट्रिप लीजिए, एक ओर 1/4 इंच टांका दूरी और दूसरी ओर 1/2 इंच टांका दूरी अंकित करें।

निचला भागः कुरती के शेष आधे भाग को पलटें और ट्रेस करें और 3/4 इंच का विस्तार करें और 1 इंच की चिप्पल बनाएं और फिर 1/4 इंच की टांका दूरी अंकित करें।

उपरी भाग	चिप्पल	निचला भाग

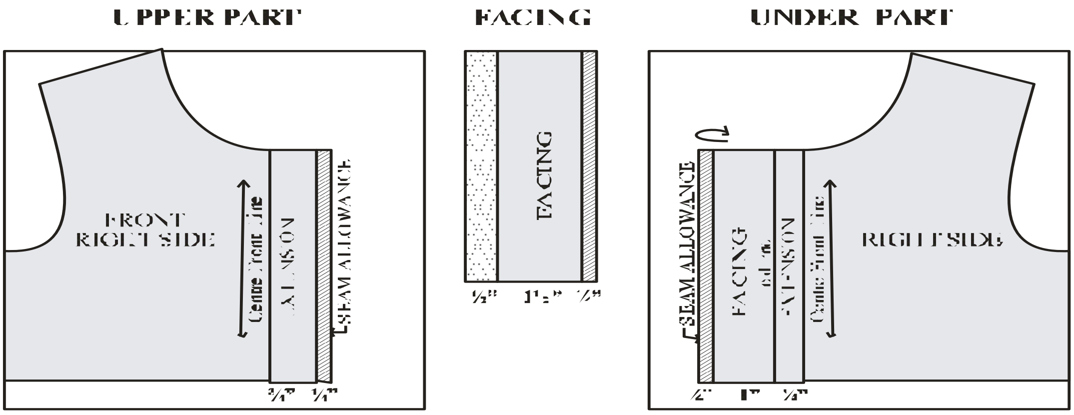

चित्र–17: चिप्पल के साथ शर्ट पलेक्ट

निर्माण चरण

उपरी भाग

1. चिप्पल की दाईं ओर को परिधान टुकड़े की उल्टी ओर रखें और फिर कोने के निकट 1/4 इंच की दूरी छोड़कर टांका लगाएं।

2. वस्त्र की दाईं ओर, चिप्पल को दाईं ओर घुमाएं। चिप्पल की टांका दूरी (1/2 इंच) को चिप्पल की उल्टी ओर दबाएं। इसे आयरन करें।

3. दोनों ओर से 1/4 इंच दूरी छोड़ें और दाईं ओर से सिलाई करें।

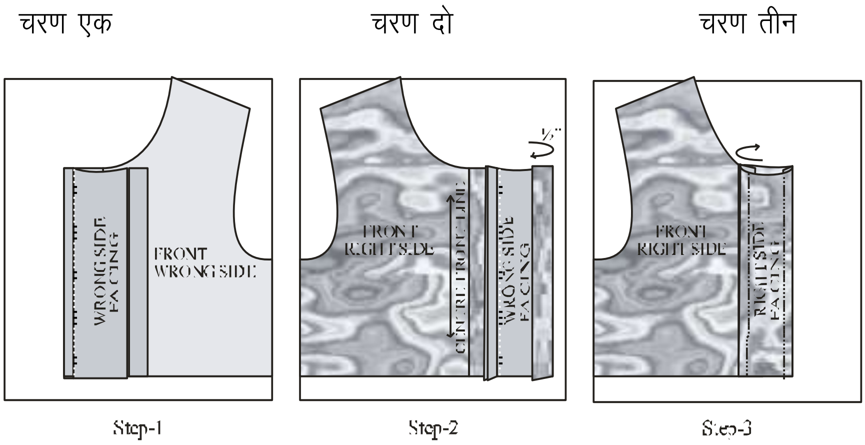

चित्र–18: चिप्पल के साथ शर्ट पलेक्ट का निर्माण

निचला भाग

वस्त्र के निचले भाग हेतु पैटर्न ट्रेस करें। चिप्पल की टांका दूरी को मोड़े, इसे वस्त्र की उल्टी ओर मोड़े। इसे पुनः वस्त्र की उल्टी ओर घुमाएं, सिलाई करें।

(आरेख हेतु साधारण शर्ट पलेक्ट के निचले भाग हेतु निर्माण चरण देखें)

4.2 बटन लगाना

बटन विस्तार बटन की चौड़ाई के बराबर होता है। सामान्य नियम के रूप में अगली कुरती की गला रेखा को आराम के लिए मध्य अगले भाग पर 1/4 इंच कम किया जाता है, जब भी मूल गला रेखा की आवश्यकता हो। पहले बटन होल को मध्य अगले भाग पर रखा जाता है, जोकि गलारेखा के नीचे बटन की चौड़ाई के बराबर होता है। यह सुनिश्चित करता है कि बटन गले की तरफ नहीं बढ़ेगा। अंतिम बटन होल लगाना परिधान की आवश्यकता पर निर्भर करता है। शेष बटन छेदों को पहले और अंतिम से समान दूरी पर अंकित किया जाता है। यहा एक अच्छा विचार है कि बटन को शीर्ष श बस्ट बिंदु पर लगाया जाए, यह सुनिश्चित करेगा कि परिधान के मध्य भाग में दरार न डालें, जिससे बस्ट पर खिंचाव आ सकता है।

बटन छेद का आकार बटन की चौड़ाई जमा 1/8 इंच के बराबर है, जिसमें बटन आसानी से घुस सके। बटन छेद को अंकित किया जाता है, जिससे मध्य भाग की परिधान ओर पर बटन की चौड़ाई और 1/8'' अतिरिक्त का विस्तार हो।

4.3 जेबों के विभिन्न प्रकार

फैशन डिजाइनर और पैटर्न मास्टर को विभिन्न परिधानों के लिए विभिन्न प्रकार की जेबों को ध्यान में रखना होता है, यह ध्यान में रखना चाहिए कि पॉकिट आकार, रूप और इसे लगाया जाना परिधान के डिजाइन के अनुसार हो। जेब एक पाउच होता है जिसके कोने बंद होते हैं और जिसे परिधान पर या परिधान के भीतर सिला जाता है। जेब प्रयोग और सजावट दोनों प्रयोजनों के लिए हो सकता है। जेब, छोटी वस्तुओं को अस्थायी रूप में रखने में मदद करती है। यह मत्वपूर्ण है कि पॉकेट आकार, रूप और स्थान परिधान की डिजाइन के अनुसार हो।

जेबों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है:

- बाहरी जेब
- इनसीम जेब
- वेल्ट जेब

4.3.1 बाहरी जेब/ पैच जेब

परिधानों पर सिली जाने वाली किसी भी आकार या रूप की **जेबें** बाहरी जेब कहलाती है। इन्हें पैच जेब कहा जाता है।

चित्र 19: बाहरी जेब

4.3.2 इन सीम जेबें

पाउच को परिधान के अंदर सिला जाता है और स्टाइल टांके लगाएं जाते हैं।

चित्र 20: इन सीम जेबें

4.3.3 वेल्ट जेब

इन्सेट पॉकेट को निचले लिप के साथ वेल्ट द्वारा तैयार किया जाता है। वेल्ट 3/8 इंच से 1 इंच चौड़ी हो सकती है। इसके एक या दो लिप तैयार खुले कोने हो सकते हैं। इस जेब को मुख्यतः जैकेट, कोट या पेंट पर पिछली ओर जेब लगायी जाती है।

चित्र 21: वेल्ट जेब

4.3.4 चीर और जोड़ की अवधारणा

जेबों को टांके के साथ या टांके में लगाया जा सकता है, पलेक्ट के लिए समान नियम का अनुसरण किया जाता है।

4.4 कॉलर चिप्पल

चिप्पल, परिधान के अनिर्मित कोनों को तैयार करने के लिए प्रयुक्त वस्त्र है, जैसे गला हाथ छेद और अगला एवं पिछला खुला भाग। चिप्पल की तीन श्रेणियां हैं:

- विस्तारित चिप्पल
- तिरछा चिप्पल
- आकारित चिप्पल

चिप्पल को किनारे में फिट करने के लिए तैयार किया जाता है यह या तो कटाई के दौरान या अनुप्रयोग से ठीक पहले तैयार होगा। पैटर्न का प्रयोग कर 'आकारित चिप्पल' को काटा जाता है, इसे समान आकार में किनारे से काटकर तैयार किया जाएगा। ''तिरछी चिप्पल'' ऐसी पट्टी है जो तिरछे भाग से काटी गयी वस्त्र की पट्टी है ताकि इसे जिस कोने के घुमाव पर प्रयुक्त किया जाना हो यह उस घुमाव के अनुरूप होगा। परिधानों से चिप्पल लगाने के बाद, इसे परिधान के अंदर घुमाया जाता है और बाहर नहीं दिखना चाहिए। आकारित और तिरछी चिप्पलों के भार को परिधान वस्त्र के कम भार वाले हल्के वस्त्र से काटा जाता है। चूंकि विस्तारित चिप्पल परिधान से काटा जाता है, परिधान और चिप्पल वस्त्र हमेशा समान होते हैं, परंतु ये कई बार डिजाइन के अनुसार भिन्न हो सकता है।

गला रेखा

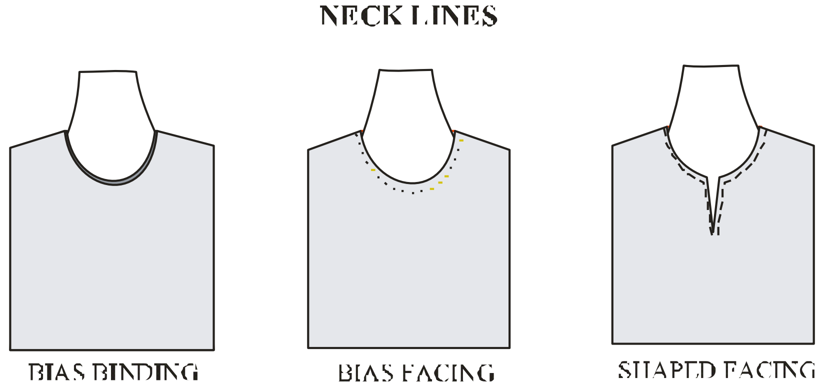

तिरछी बाइंडिंग तिरछी चिप्पल आकारित चिप्पल

चित्र 22: गला रेखा चिप्पलें

4.4.1 तिरछी पट्टी तैयार करना

तिरछी पट्टी को मिलान या विषम वस्त्र की पट्टी के रूप में तैयार किया जाता है। निर्माण में इसे छुपाने, तैयार करने और मजबूत टांकों और अनिर्मित कोनों को या चिप्पलों हेतु एवजी के रूप में प्रयोग किया जाता है। तिरछी को सुन्दर बाइंडिंग, पाइपिंग या ट्यूनिग के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। बाइंडिंग, पाइपिंग या ट्यूनिंग हेतु तिरछी **सच्ची** तिरछी है और इसे 45 डिग्री कोण द्वारा स्थापित विकर्ण रेखा के रूप में परिभाषित किया जाता है। वस्त्र के तिरछेपन से घुमावदार कोना बनाने के लिए आवश्यक अधिकतम खिंचाव, लचीलापन और प्रत्यास्थता प्रदान की जाती है।

तिरछी को खुद तैयार किया जा सकता है, उद्योग के लिए विशिष्टतः निर्मित किया जाता है, खुदरा दुकानों में वाणिज्यिक रूप से तैयार और खरीदा जाता है। वाणिज्यिक रूप से तैयार, पहले से कटी और मुड़ी तिरछी बाइंडिंग को तिरछी टेप या ''तिरछे मोड़'' के रूप में भी जाना जाता है, यह अनेक प्रकार की चौड़ाई में उपलब्ध होती है और तिरछी की जगह निम्नांकित पर निर्भर करती है:

- परिधान का स्टाइल और डिजाइन
- परिधान का प्रकार
- परिधान का प्रयोग
- परिधान की देखभाल
- वस्त्र का विकल्प
- निर्माण विधि
- मशीन और संयोजनों की उपलब्धता
- निर्माण हेतु प्रक्रियाएं

निर्माण चरण

- सबसे पहले क्रासवार ग्रेन के समानांतर लंबाईवार ग्रेन के साथ वस्त्र को मोड़कर वस्त्र के सही तिरछे को ज्ञात करें। मुड़ा कोना सही तिरछी है।
- सही तिरछी का पता लगाने के बाद चौड़ाई बनाएं और तिरछी की वांछित लंबाई हेतु आवश्यक पट्टियों की वांछित संख्या बनाएं और फिर इसे काटें।
- कई बार तिरछी पट्टियां निरंतर सिलाई चरण को पूरा करने के लिए पर्याप्त रूप में लंबी नहीं होती है। तिरछी बाइंडिंग या चिप्पल सिलाई प्रारंभ करने से पूर्व पर्याप्त संख्या में पट्टियों को जोड़े। इसके बाद 90 डिग्री कोणों पर तिरछी पट्टियां दाईं ओर रखें।
- कोणों पर 1/4 इंच टांका दूरी के साथ तिरछी सिलें।
- वांछित लंबाई के लिए आवश्यक तिरछी पट्टियों को जोड़ें। सभी खुले टांकों को दबाएं और विस्तारित बिंदुओं को काटें।

पट्टी तैयार होने के बाद इसे गला रेखा पर प्रयुक्त किया जा सकता है।

4.4.2 विस्तारित चिप्पल/ तिरछी बाइंडिंग

तिरछी बाइंडिंग का प्रयोग अनिर्मित किनारों को तैयार और मजबूत करने तथा परिधान को सुंदर रूप देने के लिए किया जाता है। कुछ मामलों में यह गला रेखा, बाजू या बाजू छेद कोनों पर चिप्पल का स्थान ले सकता है।

एक मानक तिरछी पट्टी 1 से 1/2 इंच चौड़ी होती है (परिधान के समान या विषम रंग में से किसी एक में)। वाणिज्यिक रूप से तैयार दोहरी मोड़ तिरछी टेप को भी प्रयोग किया जा सकता है।

निर्माण चरण

परिधान को सिलाई टेबल के उलटी ओर रखें। अब इस तिरछी पट्टी को परिधान पर रखें, जिसकी दाईं ओर उलटी ओर हो, दोनों अनिर्मित कोनों के साथ हो (परिधान)।

- 1/4 इंच टांका दूरी के साथ सिलें।
- तिरछी पट्टी को 1/4 इंच मोड़ें और नीचे दबाएं।
- तिरछी बाइंडिंग को सिलाई रेखा पर मोड़े और नीचे दबाएं।
- तिरछी पट्टी को परिधान की गलत ओर घुमाएं, और पहली सिलाई रेखा को कवर करें।
- तिरछी बाइंडिंग के कोने के साथ स्लिप सिलाई करें।

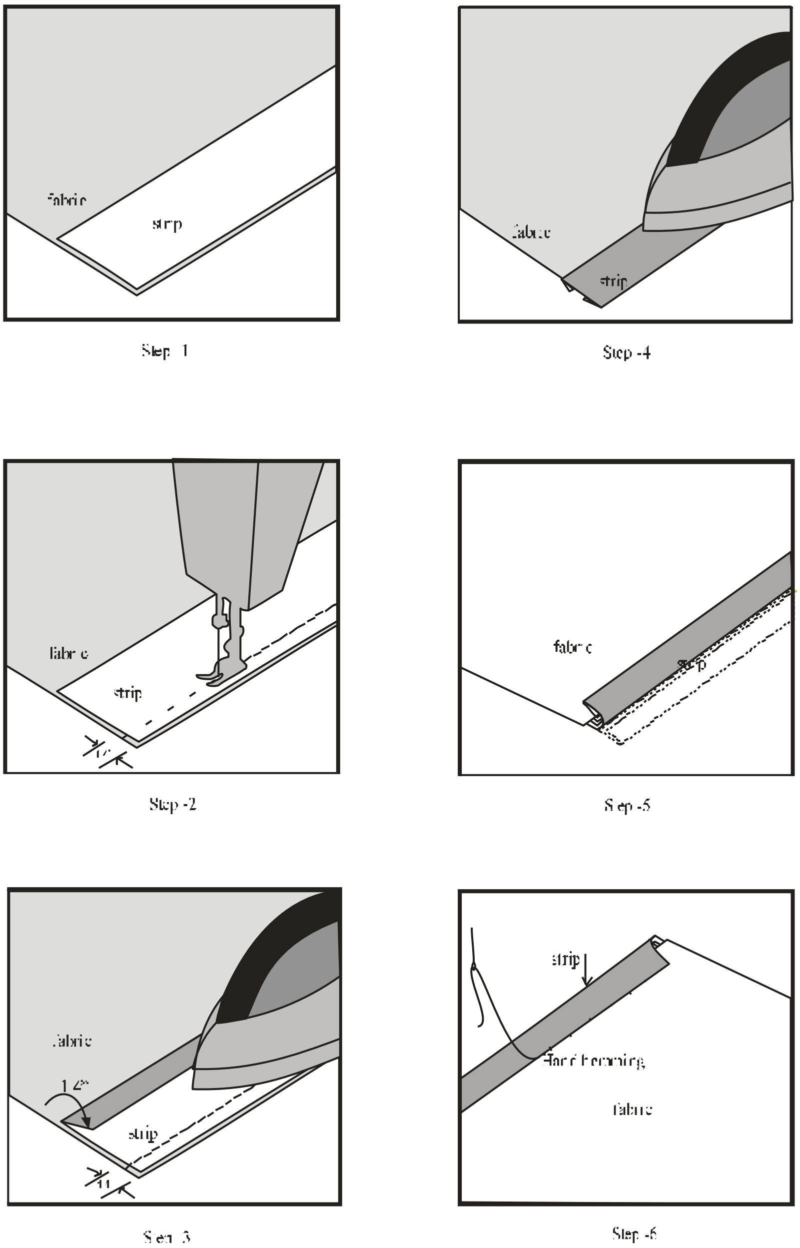

चित्र 23: तिरछी बाइंडिंग निर्माण

4.4.3 तिरछी चिप्पल

तिरछी चिप्पल, चिप्पल के बाहर वस्त्र की पट्टी है, जोकि परिधान गला रेखा से जुड़ी है, ताकि इसे कोने के घुमाव से मिलाने के लिए आकारित किया जा सके। चिप्पल को परिधान से जोड़ने के बाद इसे परिधान के अंदर घुमाया जाता है और यह बाहर नहीं दिखना चाहिए अर्थात् परिधान की दाईं ओर। (तिरछी पट्टी बनाने के लिए तिरछी पट्टी को तैयार करने हेतु निर्माण चरण देखें)।

निर्माण चरण

- तिरछी पट्टी की दाईं ओर को परिधान गला रेखा की दाईं ओर करें। जब बाइंडिंग लगाएं, प्रारंभ कोने को 1/2 इंच मोड़े और मोड़ को परिधान टांका रेखा के साथ संरेखित करें। पिन बाइंडिंग करें और प्रारंभिक बिंदु के 3 इंच के भीतर सिलें।
- प्रारंभिक कोने के मोड़ के परे इस कोने पर अतिरिक्त बाइंडिंग को काटें। इस कोने को प्रारंभिक कोने पर रखें और शेष को वस्त्र की चौड़ाई में सिलें। जब बाइंडिंग अन्दर की ओर घुमेगी, मुड़ा कोना पहले शीर्ष पर होगा इसे दूसरे कोने के साथ सिलें या स्लिप सिलें।
- ढ़का कोना वस्त्र कोना है जिसे कंधे के उपर रखा जाता है।
- घुमावदार टांका दूरी को काटें।
- चिप्पल को परिधान से दूर खोलें, सभी टांका दूरियों को चिप्पल की ओर दबाएं। चिप्पल को परिधानों के बाहर न निकलने देने के लिए टांका को चिप्पल के साथ नीचे सिला जाना चाहिए और टांका दूरी को परिधान से दूर विस्तारित करना चाहिए । गला टांका रेखा के निकट दाईं ओर से चिप्पल और टांका दूरी द्वारा सिलाई करें।
- चिप्पल के दूसरे कोने को इसकी उलटी ओर घुमाएं । दबाएं और स्लिप सिलाई करें।

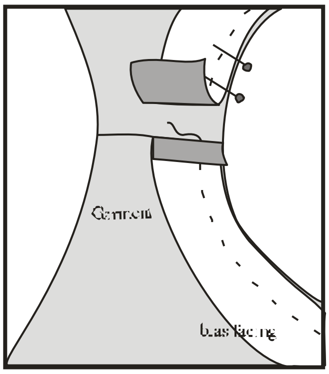

Step -1

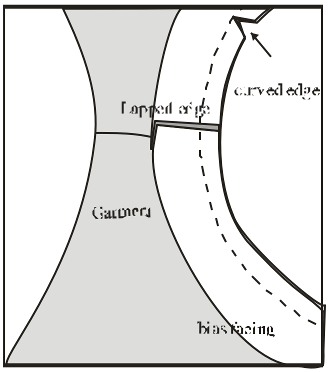

Step -3

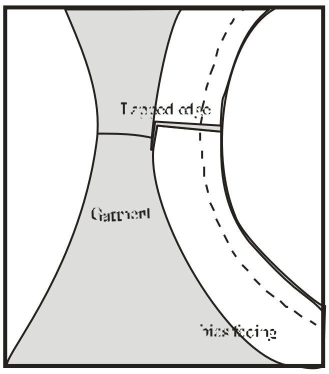

Step -2

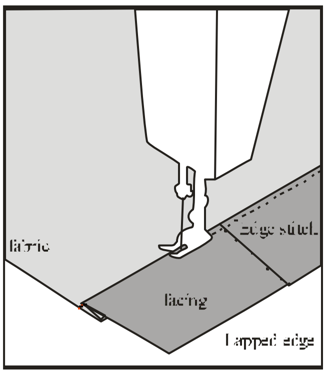

Step -4

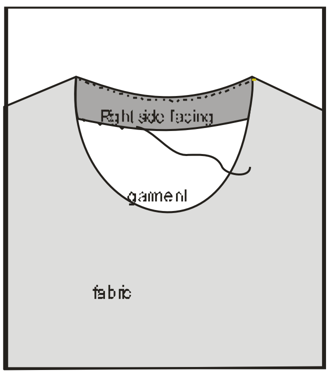

Step 5

चित्र –24: तिरछी चिप्पल निर्माण

4.4.4 आकारित चिप्पल (स्लैश गला रेखा)

आकारित चिप्पल के साथ तैयार गला रेखा आकार अर्थात् तिरछी पट्टी के साथ गला रेखा पर वस्त्र के अनिर्मित तैयार कोनों की बजाए, इसे चिप्पल के साथ तैयार किया जाता है, **जो क** गला रेखा के समान आकार का होता है।

निर्माण चरण

- दोनों अगली पिछली चिप्पल की गलत ओर को आमने सामने करें।
- दाईं ओर साथ तथा समान मार्किंग से कंधों के पिछले भाग चिप्पलों के अग्र चिप्पल भागों पर टांका लगाएं। टांके को सपाट सिलकर दबाएं और फिर खोलें।
- टांका दूरी को खुला रखना, 1/8 इंच घुमाकर चिप्पल दर्जी कोना तैयार करें। मुड़े कोनों के निकट सिलें।
- दाईं ओर एक साथ, मैचिंग, नॉच, मार्किंग और टांका रेखाएं, गले और मशीन के लिए पिन चिप्पल।
- कंधों पर क्रास टांका दूरियों पर विकर्ण रूप में काटें। घुमावदार टांके काटें और अगली गला रेखा पर खुले भाग को स्लैश करें और कोनों को काटें।
- टांके का आयरन की टिप का प्रयोग कर उलटी ओर दबाएं, खुले टांके को दबाएं।
- परिधान के अंदर चिप्पल घुमाएं, जिससे टांका रेखा अंदर जा सके। अब टॉप को 1/4 इंच की दूरी पर सिलें।

निर्माण चरण

चिप्पल तैयार करना

Steps of Construction

Preparation of facing

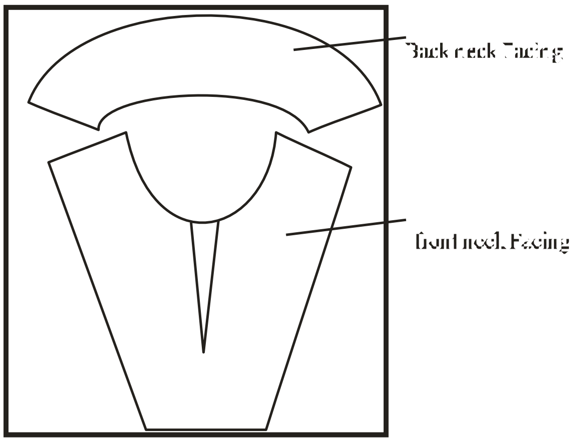

Step -1

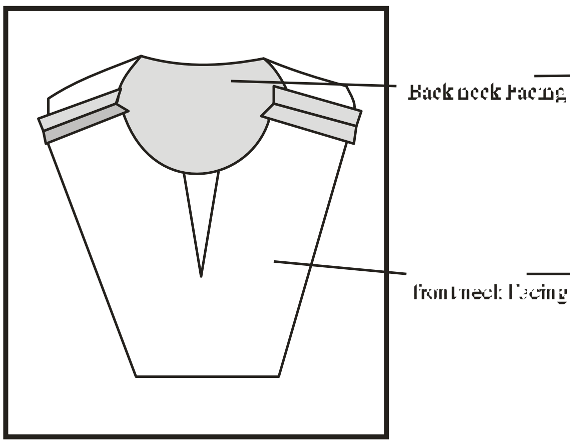

Step -2

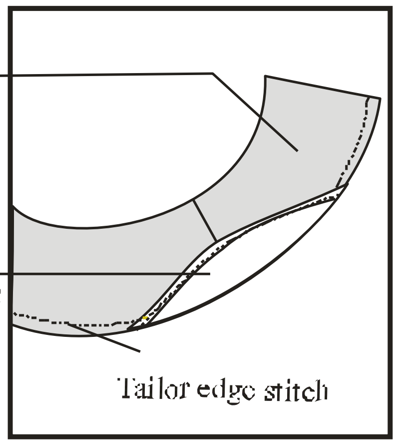

Step -3

चत्र –25: आकारित चिप्पल तैयार करना

निर्माण चरण

Steps of Construction

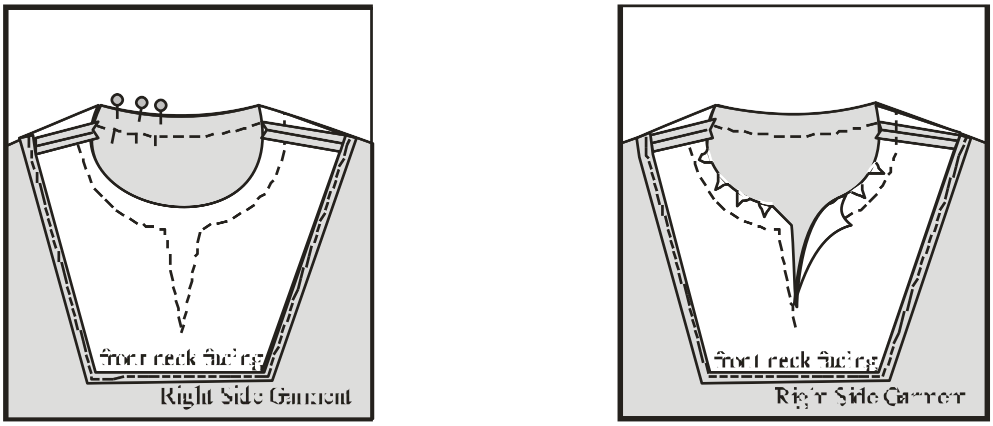

Step 4 | Step -5

Steps of Construction

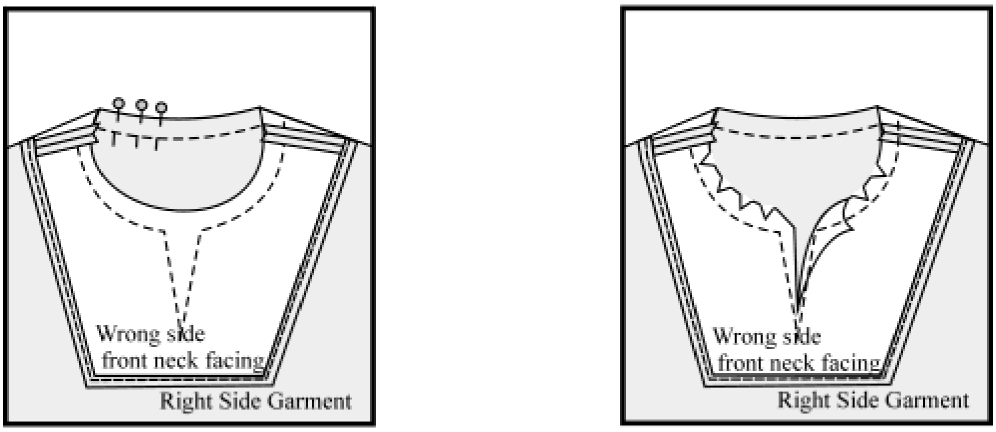

Step -4 | Step -5

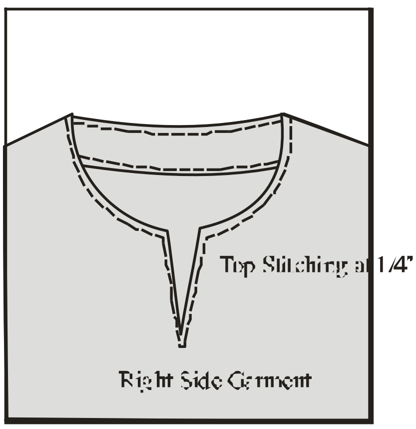

Step 6

चित्र–26 : आकारित चिप्पल निर्माण

4.4.4 कॉलर जोड़ना

पीटर पैन कॉलर को तिरछी या आकारित चिप्पल के साथ उसी ढ़ंग से जोड़ा जाता है जैसे तैयार कॉलर को गला कोने पर दाईं ओर रखकर और चिप्पल को शीर्ष पर रखा जाता है। इन्हें टांका कोने से 1/4 इंच पर एक साथ सिलें और चिप्पल को अंदर की तरफ घुमाएं और किनारे के साथ तैयार करें।

4.5 बाजू जोड़ना

आज परिधान अनेक प्रकार की बाजुओं के साथ डिजाइन किए जाते हैं, जो देखने और निर्माण विधि को कवर करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी परिधान में तैयार बांह के छेद हो सकते हैं, जो बाजू रहित दिखे या बाजू सहित हो सकते हैं। ये सेट–इन या रागलन हो सकते हैं, इन्हें अलग से बनाया जाता है और परिधान से जोड़ा जाता है। एक अन्य संभावना किमोनो बाजू है, जिसमें इन्हें मुख्य कुरती के विस्तार रूप में काटा जाता है।

बाजू रहित परिधानों की बांहसिस को इस प्रकार काटा जाता है कि यह बांह को आसानी से घेर ले और बांहसिस कोने का उपरी भाग कंधा बिंदु पर आए। परिधानों को कई बार सामान्य से चौड़े कंधों के साथ तैयार किया जाता है, जो कंधों पर गिरकर एक छोटी टोपी को निर्मित करता है। कुछ को संकरी कंधा चौड़ाइयों के साथ तैयार किया जाता है, जिससे बड़ा और अधिक कोणीय बांह छेद तैयार होगा और कुरती की तरह प्रभाव आएगा।

सेट–इन बाजू सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाला प्रकार है। जैसा कि इस प्रकार के बाजू से स्पष्ट है यह कोने या टोपी के बांहछेद में सैट हो सकती है। यह थोड़ी गोल या पूरी गोल एक साथ हो सकती है, लंबाई अधिक या कम, निचला भाग हल्का, बाहर की ओर निकली या इकट्ठी हो सकती है। बांहसिस मानक गोल बांहछेद से बाजू में भिन्न हो सकती है और इसे थोड़े गोल रूप में तैयार किया जाता है, जिससे यह कंधा कोने में डिम्पलिंग या पकरिंग के बिना आसानी से घुमाव पर आ सके। इसके लिए बाजू टोपी घुमाव को ध्यानपूर्वक बांहसिस में घुसाना चाहिए।

किसी भी परिधान में चाहे वह बाजू या बाजू रहित बनाया जाए, इन कुछ नियमों को देखा जाना चाहिए।

- परिधान और बाजू फिट की जांच करें और पैटर्न को तदनुसार बदलें।
- सभी बांहछेद और बाजू मार्किंगो को ध्यान पूर्वक और सटीक रूप में फैशन वस्त्र में अंतरित करें।
- निर्माण के दौरान सही प्रैसिंग तकनीकों का प्रयोग करें।
- जब भी संभव हो, बाजू के निचले कोने को परिधान से जोड़ने से पूर्व तैयार करें।

निर्माण चरण

- सिलाई रेखा से 1/8 इंच दूर बाजू की टोपी पर दो सिलाई पंक्तियां रखें। दो रेखाओं के मध्य दूरी 1/4 इंच होगी। ध्यान रखें कि सिलाई आकार सामान्य से अधिक हो। दोनों सिलाई रेखाओं के प्रारंभ और अंत दोनों में लंबा धागा छोड़े।
- दाईं ओर को दाईं ओर रखें और बाजू की ओर सिलाई करें।
- धागे खींचे और बाजू को कुरती के बाहछेद में घुसाएं। धागे को खींच कर और छोड़कर बाजू टोपी के आकार को ठीक करें। पिनों को स्थान पर रखें।
- बाजू को बांह छेद में सिलें।

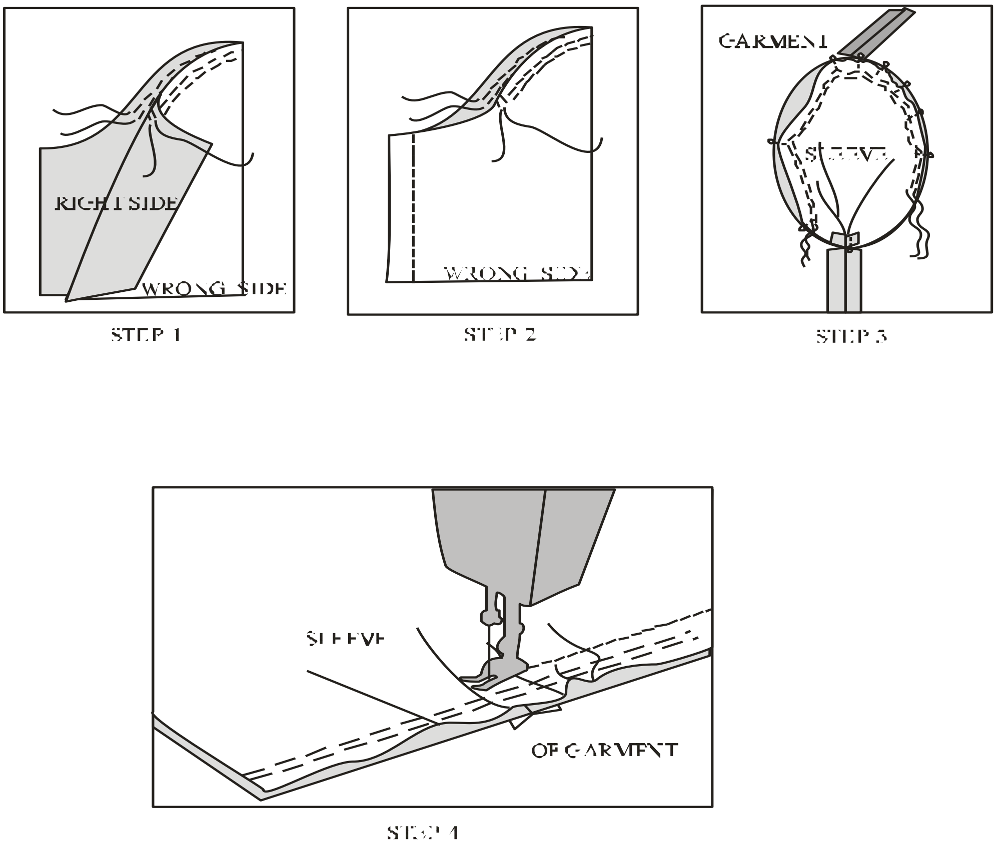

चित्र –27: बाजू जोड़ना

4.6 कफ जोड़ना

कफ वस्तुतः कफ और चिप्पल भाग से बनते हैं, जिन्हें एक या दो टुकड़ों में काटा जा सकता है। कफ अनुप्रयोग को प्रारंभ करने से पूर्व, पलैक्ट के प्रकार को प्रयुक्त करें, जो उस विशिष्ट बाजू के लिए आवश्यक है और फिर बांह बाजू टांके को पूरा करें । बाजू कोने पर चुनटें तैयार करें। कफ कोने के पलैक्ट कोने के लिए स्थान को नोट करें।

4.6.1 एक टुकड़े वाला सीधा कफ

नमूने के लिए पैटर्न टुकड़े

1. उपरी और निचले कफ प्रत्येक का एक टुकड़ा।
2. कफ के लिए माइक्रो –डॉट इंटरफेसिंग।
3. जिस बाजू पर कफ लगाया जाना हो बाजू पलैक्ट के साथ ।

निर्माण चरण

- उपरी कफ को उलटी ओर से इंटरफेसिंग के लिए डालें, जो मोड़ रेखा तक आ सकती है या मोड़ रेखा से डेढ़ इंच विस्तारित हो सकती है।
- उपरी कफ की टांका दूरी को कफ की उलटी ओर घुमाएं और आवश्यकता अनुसार 1/4 इंच या 3/4 इंच पर टॉप सिलाई करें।
- मोड़ रेखा के साथ एक दूसरे के सामने मोड़ें और दोनों कोनों को उलटी ओर से पिन करें। दोनों ओर से आधे इंच की दूरी पर सिलें। कोनों के निकट अतिरिक्त टांका दूरी को काटें।
- अंदर और बाहर घुमाएं और कोनों को खीचें।
- बाजू की उलटी ओर को कफ के अंदर दाईं ओर रखें, इसकी मशीन से सिलाई करें।

➢ सभी टांका दूरी का कफ में प्रवेश करें। कोनों पर मशीन चलाएं, उपरी कफ की दाईं ओर से बाजू की दाईं ओर।
➢ कफ कोनों के सभी भागों पर 1/4 इंच की दूरी पर वैकल्पिक टॉप सिलाई।

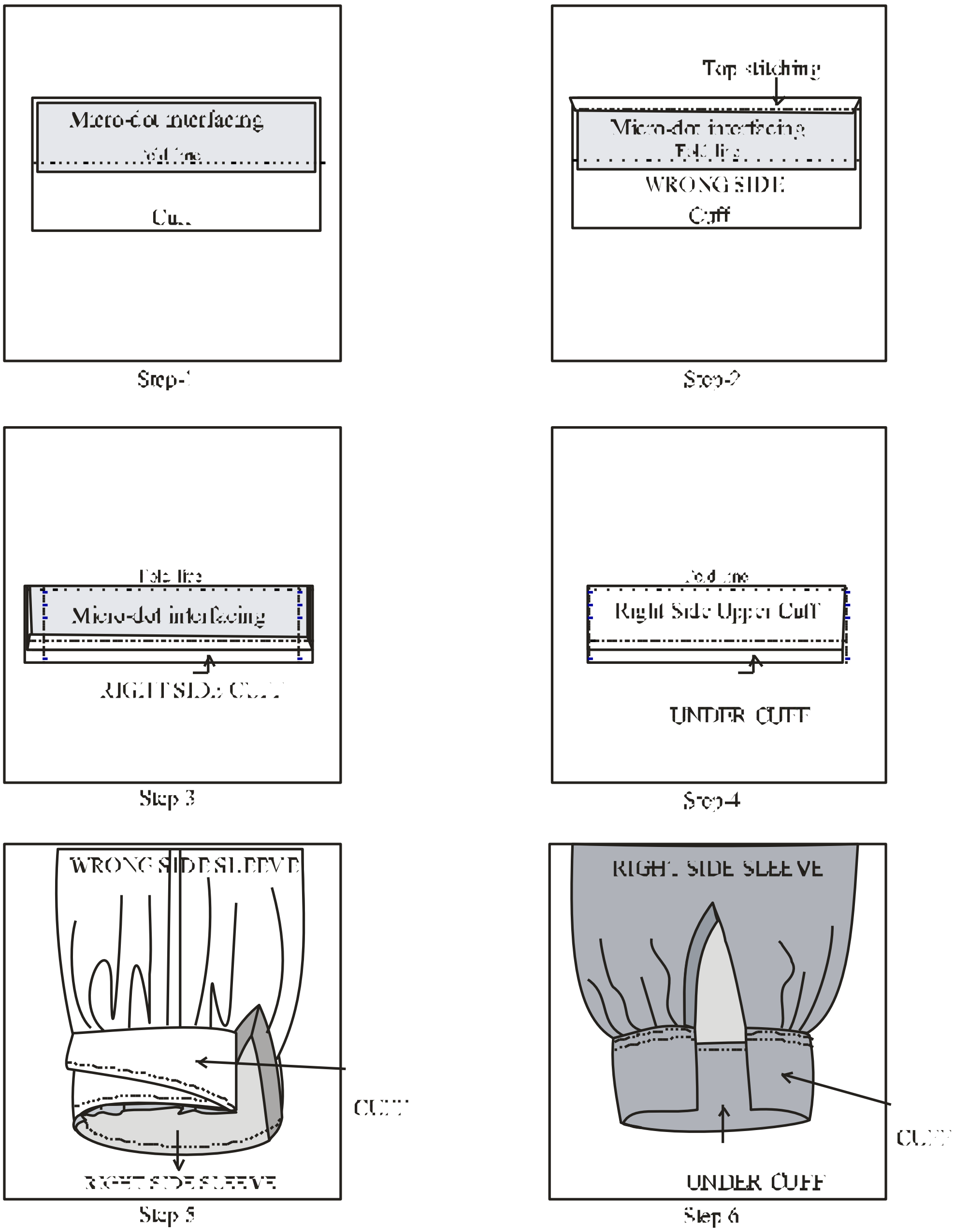

चित्र –28: कफ संयोजन

4.6.2 कमरबंध जोड़ना

कमरबंध को उसी ढ़ंग में जोड़ा जाता है जैसे कफ जोड़ा जाता है।

4.7 जोड़ जोड़ना

स्कर्ट जोड़ को पूरी तरह पंक्तिबद्ध किया जाता है ताकि सभी टांके संलग्न हों। इसी विधि में सिलाई मशीन का प्रयोग किया जाता है, परंतु टॉप सिला जाता है। यह कठिन नही है, परंतु कंधे के अगले भाग पर टांकों को लगाने में ध्यान रखना चाहिए।

पैटर्न टुकड़े

➢ दो जोड़ टुकड़े
➢ शर्ट के अगले और पिछले टुकड़े

निर्माण चरण

➢ दाईं ओर के साथ रखते हुए, जोड़ की शर्ट के पिछले भाग में **तुरुपाई** करें। शर्ट के पिछले भाग की उपरी ओर के लिए जोड़ की दाईं ओर की **तुरुपाई** करें। 1/2 इंच टांका दूरी पर सिलाई करें। तीनों परतों पर सिलाई करें। टांका दूरी ग्रेड करें, जोड़ टांका दूरी को सबसे चौड़ा रखें , जोड़ दबाएं और इसे उपर करें तथा शर्ट से दूर जोड़ को स्थायी स्थिति में लगाएं।
➢ जोड़ की दाईं ओर की **तुरुपाई** करें और कंधा जोड़ पर शर्ट के अगले भागों के उलटे ओर करें। दाईं ओर को साथ रखकर जोड़ और शर्ट के अगले भाग के टांके को मिलाएं। (शर्ट जोड़ और जोड़ चिप्पल के बीच होगी)।
➢ जोड़, शर्ट के अगले भाग और जोड़ चिप्पल सिलें। शर्ट को दाईं ओर घुमाएं और दबाएं।

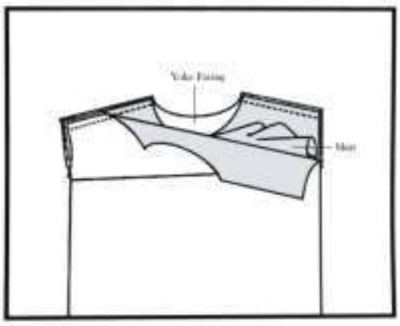
चरण एक

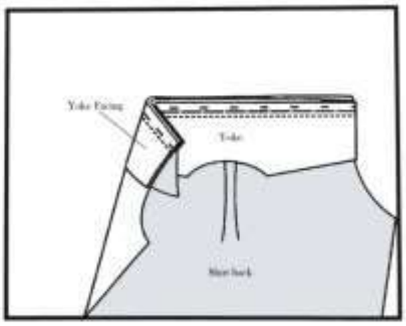
चरण दो

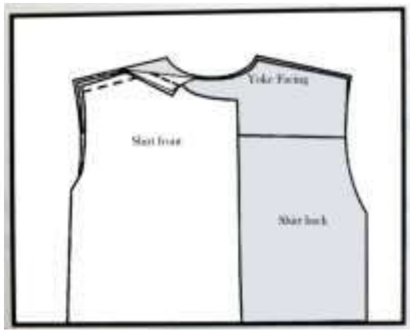
चरण तीन

कार्यकलाप

घर से तीन परिधान लें, एक कुरता, एक साड़ी ब्लाउज और एक शर्ट, अनेक तैयार भागों की पहचान करें जैसे चिप्पल, जेब, बाजू , पलैक्ट, कफ और अन्य तत्व।

खाली स्थानों को भरें।

1. पलैक्ट, परिधान में एक .... खुली जगह है। इसे .... और .... के साथ इस प्रकार तैयार किया जाना चाहिए जिससे ड्रेसिंग में सुविधा हो।

2. पलैक्ट को .... की बजाए अगली या पिछली गला रेखा .... पर प्रयोग किया जा सकता है।

3. चयनित पलैक्ट का प्रकार और .... इसके .... और परिधान के .... पर निर्भर करता है।

4. .... परिधानों की बांहसिस को इस प्रकार काटा जाता है कि यह .... पर बांह छेद को घेरे।

5. सेट–इन बाजू सबसे अधिक प्रयोग होने वाले .... हैं; यह बाजू वस्तुतः कोने या टोपी के बांह छेद की .... है।

अध्याय –पांच

कुरती/टॉप और स्कर्ट का निर्माण

5.1 टॉप/ कुरती संयोजन

चित्र 5.1.1 में दिखाए अनुसार बाजू कोने के लिए समांतर ग्रेन रेखा के साथ वस्त्र पर पैटर्न रखें। चित्र (5. 1.1क) में दिखाए अनुसार टांका दूरी जोड़े। कंधे, गला रेखा और बांह छेद पर 1/2 इंच टांका दूरी अंकित करें और टांके पर 1 इंच।

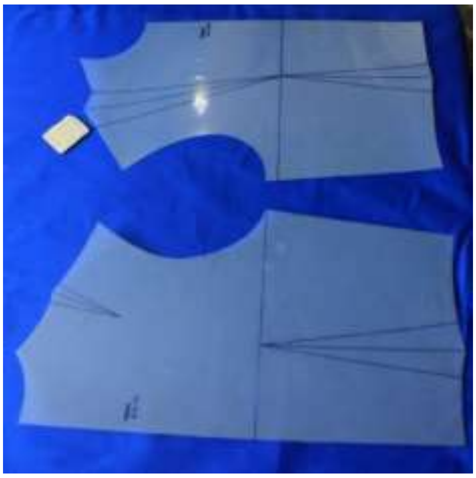

चित्र 5.1.1

चित्र 5.1.1 क

चित्र 5.1.1 ख में दिखाए अनुसार काटें

चित्र 5.1.1 ख

चरण 1: डार्ट को प्रारंभ से लेकर डार्ट लात के कोने तक सिलें। डार्ट लात पर टांके को मजबूत करने के लिए बैंक सिलाई करें और इसी प्रकार सारे डार्ट को सिलें।

(डार्ट अर्थात् समाप्ति बिंदु के अंत में बैक सिलाई न करें)

डार्ट के समाप्ति बिंदु पर 1 इंच अतिरिक्त धागा छोड़े और दर्जी गांठ लगाएं या घुमाएं ताकि साफ काम हो जैसा कि चित्र 5.1.2 ख में दर्शाया गया है।

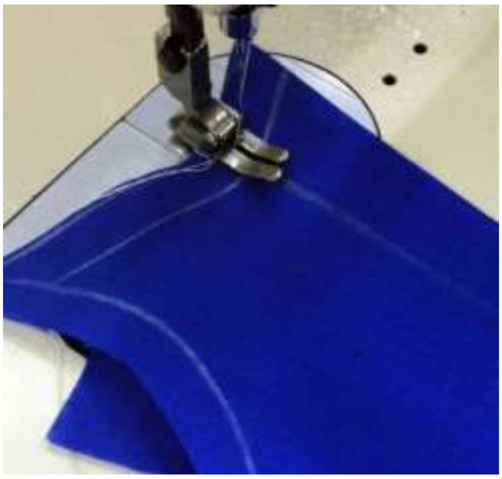

चित्र 5.1.2

चित्र 5.1.2 क

चित्र 5.1.2 ख

चरण दो: सभी डार्टों को बंद करने के बाद, आसानी के लिए पिछले कंधे पर हल्की चुनट बनाएं।

अगले कंधे की दाईं ओर को पिछले कंधे की दाईं ओर पर रखें और सिलें, पिछले कंधे की अतिरिक्त लंबाई को धीरे से छोड़े जैसा कि चित्र 5.1.3 और 5.1.3 क में दिखाया गया है।

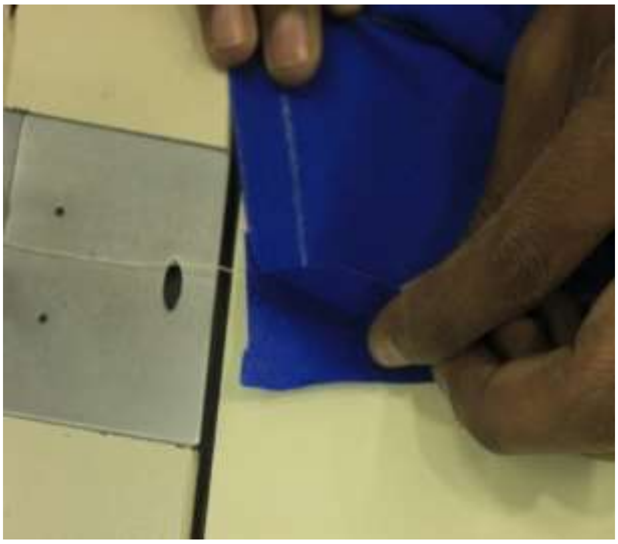

चित्र 5.1.3

चित्र 5.1.3 क

डार्ट को मापते हुए (चित्र 5.1.3 ख के अनुसार) अतिरिक्त डार्ट को टांका रेखा में समायोजित करें। सही कार्य के लिए डार्ट प्राप्ति को विपरित दिशा में रखें और फिर टांके में सिलाई करें।

चित्र 5.1.3 ख

चित्र 5.1.4

चरण 3: चित्र 5.1.4 के अनुसार परिधान की एक ओर पर टांके को बंद करें।

चरण 4: टांका रेखा में जिपर दांत लगाकर **अन्य** टांका ओर पर अदृश्य जिपर जोड़ें। चित्र 5.1.5 के अनुसार जिपर के पैर में जिपर दांत प्रवेश करें।

अब चित्र 5.1.5 क के अनुसार जिपर दांत के निकट गहरे में सिलाई करें।

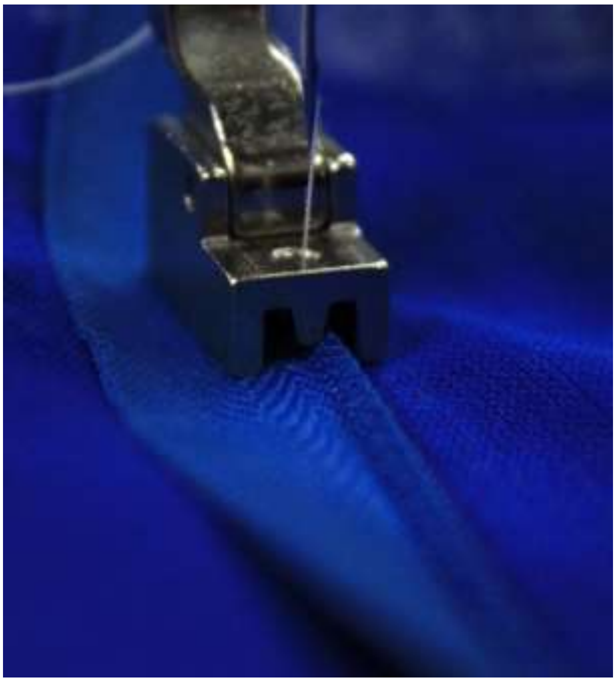

चित्र 5.1.5

चित्र 5.1.5 क

जिपर के स्लाइडर को खींचे और स्लाइडर को सिलें और बैक सिलाई करें।

अब इसी कदम को जिपर दांत की दूसरी ओर के लिए दोहराएं और इसे चित्र 5.1.5 ग में दिखाए गए अनुसार जिपर पैर के अन्य भाग में प्रवेश करें।

चित्र 5.1.5 ख

चित्र 5.1.5 ग

चित्र 5.1.5 घ के अनुसार जिपर दांत के निकट सिलाई होनी चाहिए।

इसके बाद वस्त्र की अतिरिक्त दूरी को 1/4 इंच पर दो बार मोड़कर अनिर्मित कोने को तैयार करें ओर कोने पर टांका लगाएं।

चित्र 5.1.5 घ

चित्र 5.1.5 ङ.

चरण 5: कंधा टांका और साइड टांके के अनिर्मित कोने को चित्र 5.1.16 और चित्र 5.1.6 क में दिखाए अनुसार ओवरलॉक सिलाई द्वारा इसे तैयार करें।

चित्र 5.1.6

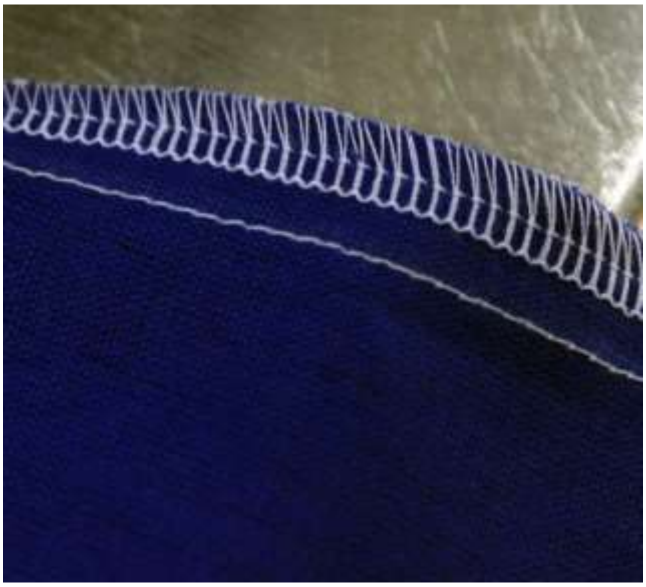

चित्र 5.1.6 क

चरण 6: तिरछी पट्टी के साथ गला रेखा को तैयार करें। चित्र 5.1.7 अनुसार तिरछी पट्टी काटें।

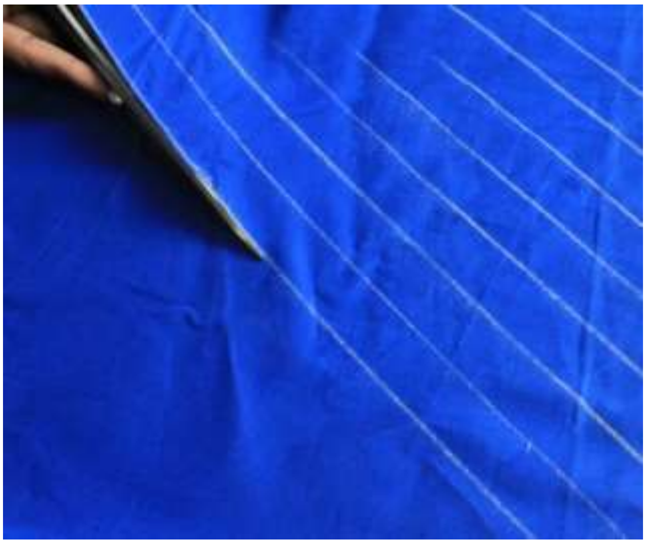

चित्र 5.1.7

चित्र 5.1.7 क के अनुसार गला रेखा की दाईं ओर पर तिरछी पट्टी रखें चित्र 5.1.7 ख अनुसार 1/4 इंच की दूरी पर सिलाई करें।

चित्र 5.1.7 क

चित्र 5.1.7 ख

पट्टी को उलटी ओर मोड़ें और चित्र 5.1.7 ग में दर्शाए अनुसार कोना सिलाना।

पट्टी के अनिर्मित कोने को 1/4 इंच की दूरी पर मोड़ें और एक बार फिर परिधान की उलटी ओर पट्टी को गला रेखा के साथ मोड़ें और क्रमशः चित्र 5.1.7 घ, चित्र 5.1.7 ड. चित्र 5.1.7 के अनुसार कोने पर सिलाई करें।

चित्र 5.1.7 ग

चित्र 5.1.7 घ

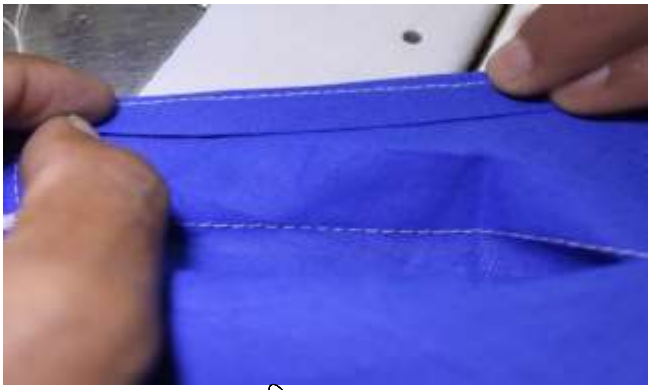

चित्र 5.1.7 ड.

चित्र 5.1.7 च

चरण 7: 1/2 इंच की दूरी पर अनिर्मित कोने को मोड़ कर किनारा रेखा तैयार करें और चरण दोहरा कर इसे फिर 1/2 इंच मोड़े। चित्र 5.1.8 में दर्शाए गए अनुसार कोना टांका दें।

चित्र 5.1.8

चित्र 5.1.9 (अगला)

चित्र 5.1.9 क (पिछला)

यह पूर्ण टॉप/ कुरती है।

5.2 स्कर्ट का निर्माण

मोड़ या शीशे पर पैटर्न ट्रेस करें, मार्कर के अनुसार मध्य–अगले भाग पर पैटर्न बनाएं और चित्र 5.2.1 और चित्र 5.2.1 क में दर्शाए अनुसार अगले और पिछले टुकड़े काटें।

चित्र 5.2.1

चत्र 5.2.1 क

चरण 1: चित्र 5.2.2 के अनुसार सभी डार्टों को सिलें (कृपया पिछले अध्याय में दर्शाए गए अनुसार डार्ट तैयार करें) ।

चित्र 5.2.2

चरण 2: चित्र 5.2.3 के अनुसार साइड टांके को सिलें । खुली जगह के लिए बाईं ओर टांके पर कमर से 6 इंच से 7 इंच छोड़े और शेष टांके की सिलाई करें।

चित्र 5.2.3

चरण 3: साइड टांके में जिपर जोड़ें जैसा कि पिछले अध्याय के चित्र 5.2.4 में कुरती/ टॉप हेतु किया गया था।

चित्र 5.2.4

चरण 4: चित्र 5.2.5 में दर्शाए गए अनुसार ओवर लॉकिंग द्वारा साइड टांके को तैयार करें।

चित्र 5.2.5

5.2.1 स्कर्ट कमर बैंड का निर्माण

चरण 5: चित्र 5.2.6 के अनुसार कमर में कमर बैंड जोड़ें। स्कर्ट की दाईं ओर (टॉप पर) को कमर बैंड (नीचे) की दाईं ओर रखें। सिलाई रेखा पर सिलें। फिर जिपर के खुले भाग को तैयार करने के लिए कमर बैंड की चौड़ाई को पीछे मोड़ें । खुले भाग पर कमर बैंड विस्तार हेतु वस्त्र पर सिलाई करें और फिर कमर बैंड चौड़ाई को वापस घुमाएं ताकि कमर बैंड तैयार हो सके। कमर बैंड के कोने पर सिलाई करें।

अपने विकल्प के अनुसार कमरबैंड तैयार करें या आप चित्र 5.2.6 क में दिए गए अनुसार दोहरी या एकल सिलाई दे सकते हैं।

चित्र 5.2.6

चित्र 5.2.6 क

चरण 6 : 1 इंच पर दो बार मोड़कर किनारा रेखा तैयार करें, चित्र 5.2.7 के अनुसार कोना टांक दें।

चित्र 5.2.7

चित्र 5.2.8 (अगला)

चित्र 5.2.8 क (पिछला)

यह स्कर्ट तैयार है।

कार्यकलाप

अनेक प्रकार की स्कर्टों के चित्र इकट्ठे करें और सिलाई के दौरान डिजाइन ब्यौरों की पहचान करें।

खाली स्थानों को भरें।

1. डार्ट को सही ढ़ंग से तैयार करने के लिए डार्ट को विपरित दिशा में रखें और फिर टांका लगाएं।

2. दाईं ओर को करमबंध की दाईं ओर पर रखकर कमर से जोड़ें।

3. टॉप की गला रेखा तिरछी पट्टी के रूप में पाइपिंग टॉप के साथ हो सकती है।

4. जिपर को जिपर के दांत के साथ टांका रेखा से निकटतम संभव कर जोड़ा जा सकता है।

5. डार्ट के समाप्ति बिंदु पर अतिरिक्त धागा छोड़े और दर्जी गांठ लगाएं।

अध्याय –6

सलवार और कमीज / कुर्ती का निर्माण

6.1 सलवार निर्माण

मार्कर के अनुसार पैटर्न ट्रेस करें और चित्र 6.1.1 के अनुसार सभी टुकड़ों को काटें।

चरण 1:

कली या साइड पैनल के मध्य अगले भाग को **सलें**। मध्य अगले भाग में केसिंग को तैयार करने के लिए 2 इंच छोड़े। खुले भाग को तैयार करें और फिर बाएं मध्य पैनल को बाईं कली से जोड़े और दाएं मध्य पैनल को दाईं कली **से जोड़े**।

इस प्रक्रिया को दोहराएं ताकि साइड टांका पैनल को पिछले पैनल के साथ जोड़ें और चित्र 6.1.2क, 6.1.2 ख, 6.1.2ग, 6.1.2 घ, 6.1.2 ड. और 6.1.2 च में दर्शाए गए अनुसार मध्य अगले और मध्य पिछले भाग को फ्रेंच टांके के साथ जोड़ें।

चित्र 6.1.2

चित्र 6.1.2क

चित्र 6.1.2ख

चित्र 6.1.2ग

चित्र 6.1.2घ

चित्र 6.1.2ङ.

चित्र 6.1.2च

इसी प्रकार दूसरी लात को जोड़े। चित्र 6.1.3 में दर्शाए गए अनुसार इनसीम को बंद कर दें और सिलें।

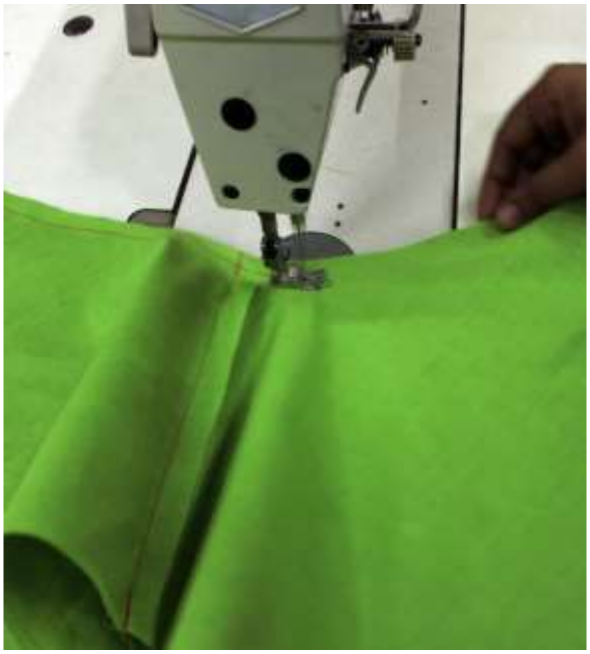

चित्र 6.1.3

चरण 2: अब किनारे के लिए दो पट्टे लें, जिनकी दाईं ओर एक–दूसरे के इस प्रकार सामने हो कि चारों ओर की टांका दूरी एक जैसी है। टॉप को **सलें**

चित्र 6.1.4 के अनुसार किनारा पट्टे के निचले भाग और साइड तैयार करें।

चित्र 6.1.4

चरण 3: मध्य–पिछले भाग पर कमर पैनल को फ्रेंच टांके से जोड़ें।

चरण 4: अब मध्य–अगले भाग को फ्रेंच टांके के साथ बंद करें और **सलें** और चित्र 6.1.5 और चित्र 6.1.5क में दिए गए अनुसार ड्रास्ट्रिंग खुले भाग के लिए केसिंग छोड़ें।

चित्र 6.1.5

चित्र 6.1.5क

1/8 इंच का चीरा बनाएं और चित्र 6.1.5ख के अनुसार खोल को खोलें।

चित्र 6.1.5 ख

खोल के अनिर्मित कोने को मोड़े और चित्र 6.1.5ग और चित्र 6.1.5घ में दिखाए गए अनुसार कोना सिलें।

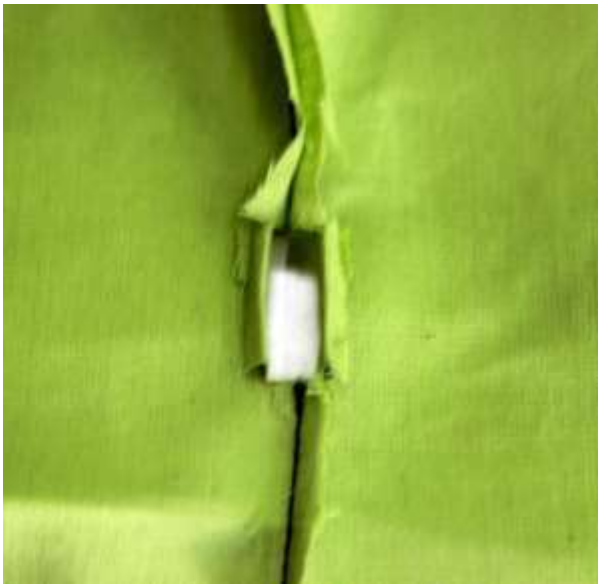

चित्र 6.1.5ग

चित्र 6.1.5घ

चरण 5: अब डेढ़ इंच की दूरी पर कमर रेखा को मोड़ें और चित्र 6.1.6 में दर्शाए गए अनुसार कमरबंध को तैयार करें।

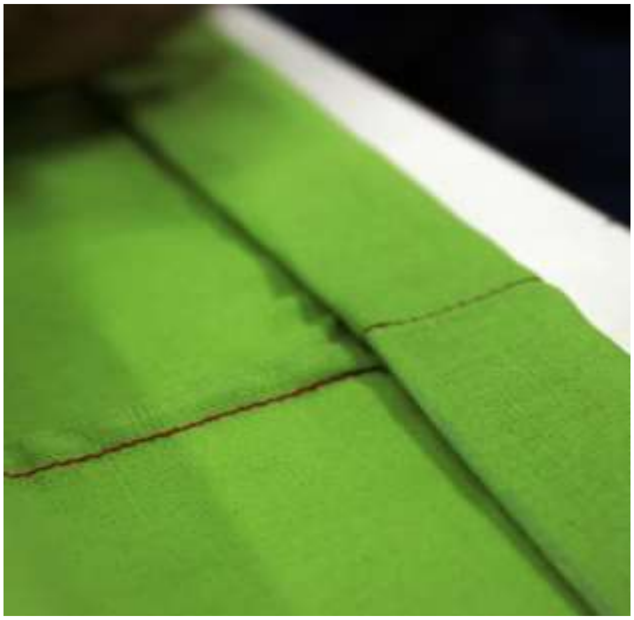

चित्र 6.1.6

चरण 6: इसके बाद चाकू चुनटें बानाएं । अतिरिक्त वस्त्र को तैयार करें ओर चित्र 6.1.7, चित्र 6.1.7क, चित्र 6.1.7ख और चित्र 6.1.7ग में दर्शाए गए अनुसार इन्हें कमर पैनल से जोड़ें।

चित्र 6.1.7

चित्र 6.1.7क

चित्र 6.1.7ख

चित्र 6.1.7ग

चित्र 6.1.8 (पूर्ण सलवार)

6.2 कमीज /कुरती का निर्माण

अगले और पिछले पैनलों को मोड़ पर ट्रेस करें और चित्र 6.2.1, चित्र 6.2.1क और चित्र 6.2.1ख में दर्शाए गए अनुसार सभी टुकड़ों को काटें।

चित्र 6.2.1

चित्र 6.2.1क

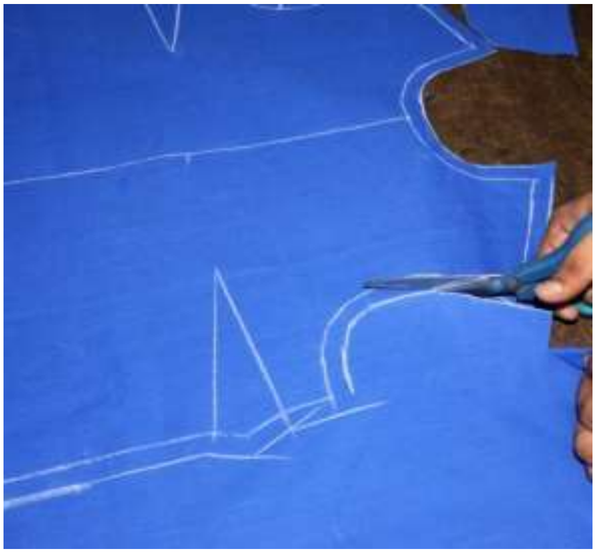

चित्र 6.2.1ख

चरण 1: अध्याय 5 में वर्णित और चित्र 6.2.2 में दर्शाए गए अनुसार सभी डार्टों को बंद करें।

चित्र 6.2.2

चरण 2: पिछले कंधे पर की अधिक आसानी क्षेत्र को झूठी चुनट द्वारा कम करें और चित्र 6.2.3 में दर्शाए गए अनुसार कंधे जोड़ें।

चित्र 6.2.3

चरण 3: चित्र 6.2.4 में दर्शाए गए अनुसार साइड टांके को बंद करें।

चित्र 6.2.4

चरण 4: अध्याय 5 में यथावर्णित अनुसार तिरछी पट्टी के साथ गला रेखा और बांहछेद को तैयार करें और यह चित्र 6.2.5, चित्र 6.2.5 क, चित्र 6.2.5 ख, चित्र 6.2.5 ग, चित्र 6.2.5घ, चित्र 6.2.5 ड. में दर्शाया गया है।

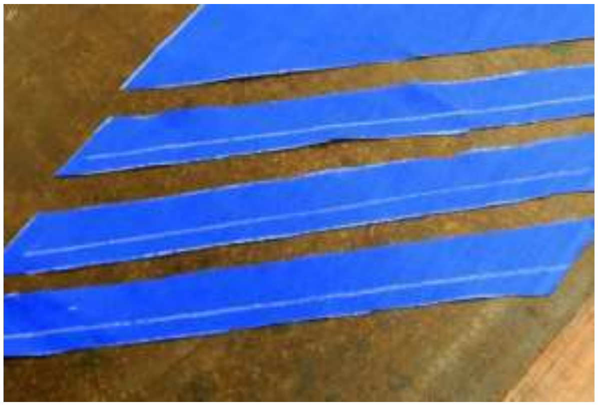

चित्र 6.2.5

चित्र 6.2.5क

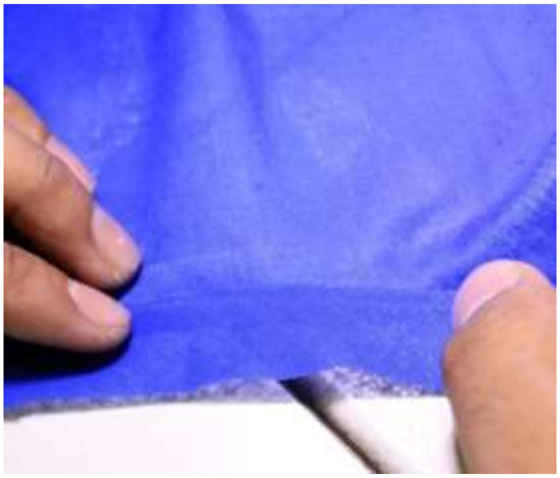

चित्र 6.2.5ख

चित्र 6.2.5ग

चित्र 6.2.5घ

चित्र 6.2.5ड.

चरण 5: 1/4 इंच पर दो बार मोड़ कर किनारे और साइड चीरे को तैयार करें और चित्र चित्र 6.2.6, चित्र 6.2.6क, चित्र 6.2.6ख, चित्र 6.2.6ग और चित्र 6.2.6 घ में दर्शाए गए अनुसार कोने पर सिलाई करें ।

चित्र 6.2.6

चित्र 6.2.6क

चित्र 6.2.6ख

चित्र 6.2.6ग

चित्र 6.2.6घ

चित्र 6.2.7 (अगला)

चित्र 6.2.7(पिछला)

(सिली हुई कमीज /कुर्ती)

कार्यकलाप

विभिन्न प्रकार की सलवार एवं कमीजों के चित्र एकत्रित करें और उन डिजाइनों की पहचान करें, जिन्हें आप सिल सकते हैं।

खाली स्थानों को भरें

1. सलवारों का कमर पैनल................................... टांके के साथ .... पर जुड़ा होता है।

2. पिछले कंधे पर आसानी कंधा टांके पर .... चुनट द्वारा .... है।

3. सलवारों की .... ओर को .... कहा जाता है।

4. सलवार के निचले भाग के .... या .... चुनटों के साथ तैयार किया जाता है।

5. सलवार को .... की मदद से .... में प्रवेश किया जाता है।

अध्याय –7

चुड़ीदार और कलीदार कुरते का निर्माण

7.1 चुड़ीदार का निर्माण

चरण 1: 2 मीटर वस्त्र लें और चित्र 7.1.1 में दर्शाए गए अनुसार लंबाई –वार मोड़े।

चित्र 7.1.1

फिर वस्त्र को विकर्ण में मोड़ें और चित्र 7.1.1 क में दर्शाए गए अनुसार पैटर्न बनाएं।

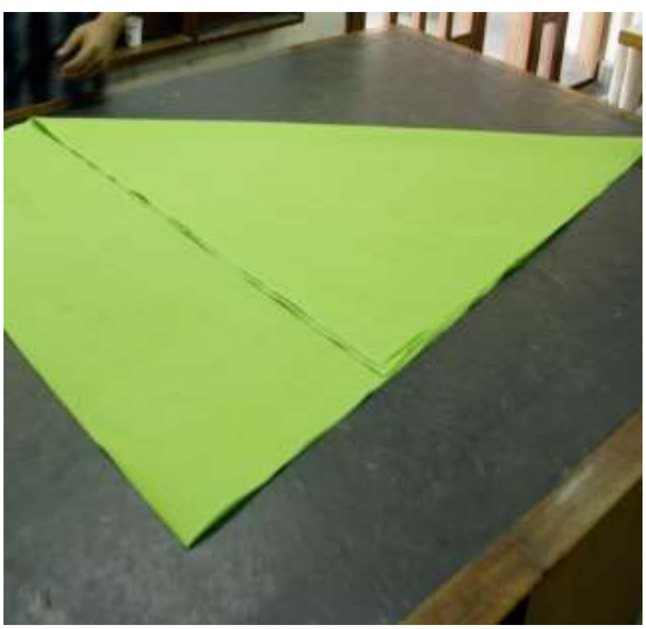

चित्र 7.1.1 क

चरण 2: चित्र 7.1.2 और चित्र 7.1.2 क में दर्शाए गए अनुसार सभी टुकड़ों को ट्रेस करें और काटें।

चित्र 7.1.2

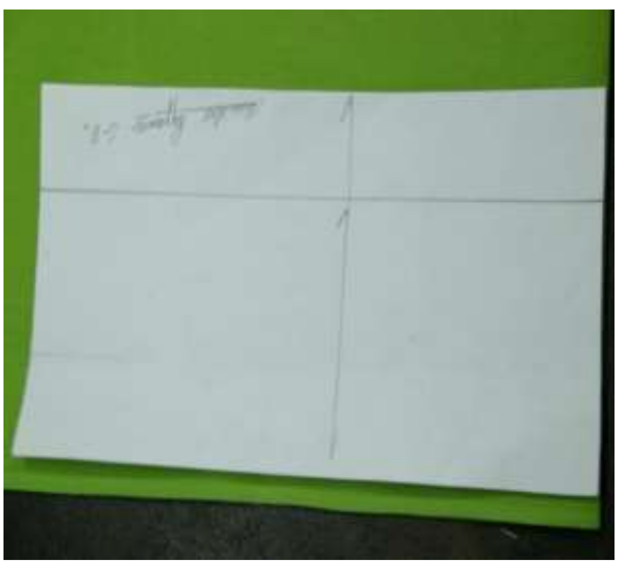

चित्र 7.1.2क

चरण 3: वस्त्र के त्रिकोणीय टुकड़े को जोड़ें, यदि चित्र 7.1.3 और चित्र 7.1.3क में दर्शाए गए अनुसार पैटर्न फिट न हो तो

चित्र 7.1.3

चित्र 7.1.3 क

चरण 4: चित्र 7.1.4 में दर्शाए गए अनुसार फ्रेंच टांके के साथ मध्य–अगले और मध्य –पिछले भाग को जोड़ें। चित्र 7.1.4 क में दर्शाए गए अनुसार टांका बंद करें।

चित्र 7.1.4

चित्र 7.1.4क

चरण 5: इसके बाद ड्रास्ट्रिंग खुला भाग बनाएं और कमर पैनल में सलवार के समान कमरबंध को तैयार करें और चित्र 7.1.5 में दर्शाए गए अनुसार लात पैनल से जोड़ें।

चित्र 7.1.5

चरण 6: कोने को मोड़कर किनारा रेखा तैयार करें और सिलाई करें।

चित्र

7.1.6 (सिली और तैयार चुड़ीदार)

7.3 कलीदार कुरते का निर्माण

पैटर्न को रखें और ट्रेस करें व चित्र 7.2.1 में दिए गए अनुसार सभी टुकड़े काटें।

चित्र 7.2.1

7.2.1 कुरता पलैक्ट

चरण1: चित्र 7.2.2 में दर्शाए गए अनुसार कलीदार कुरते के मध्य अगले भाग पर पलैक्ट तैयार करें।

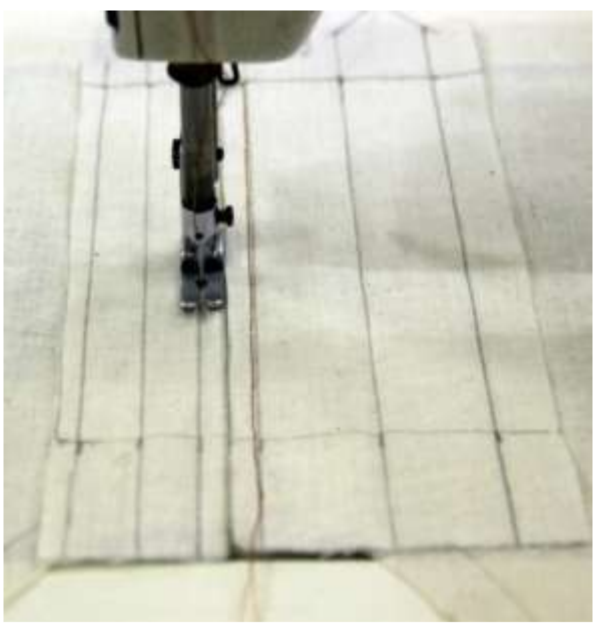

चित्र 7.2.2

पलैक्ट टुकड़े को गला रेखा खुले भाग की दाईं ओर रखें और चित्र 7.2.2 क में दर्शाए गए अनुसार 1/4 इंच की दूरी पर सिलाई करें। मोड़ रेखा पर पलैक्ट को मोड़ें और इसे सिलाई रेखा के उपर रखें, चित्र 7.2.2 ख में दर्शाए गए अनुसार कोना टांका लगाएं।

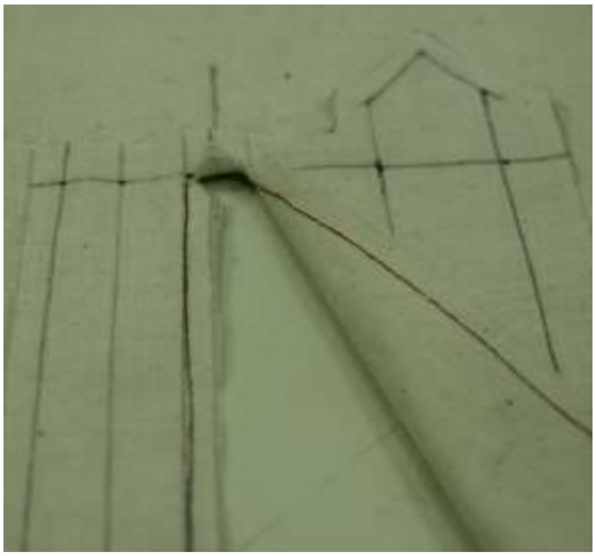

चित्र 7.2.2 क

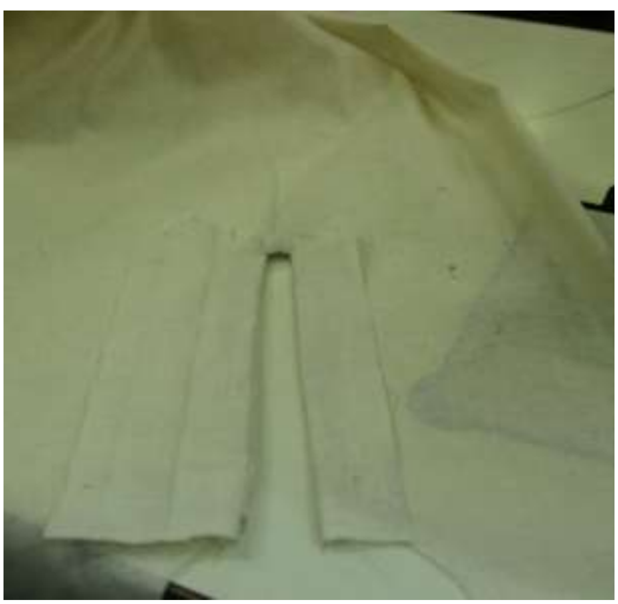

चित्र 7.2.2ख

इसी प्रक्रिया को दूसरी ओर के साथ दुहराएं ओर डायमंड का निर्माण करें तथा चित्र 7.2.2 ग और चित्र 7.2.2 घ में दर्शाए गए अनुसार कोना टांका लगाएं।

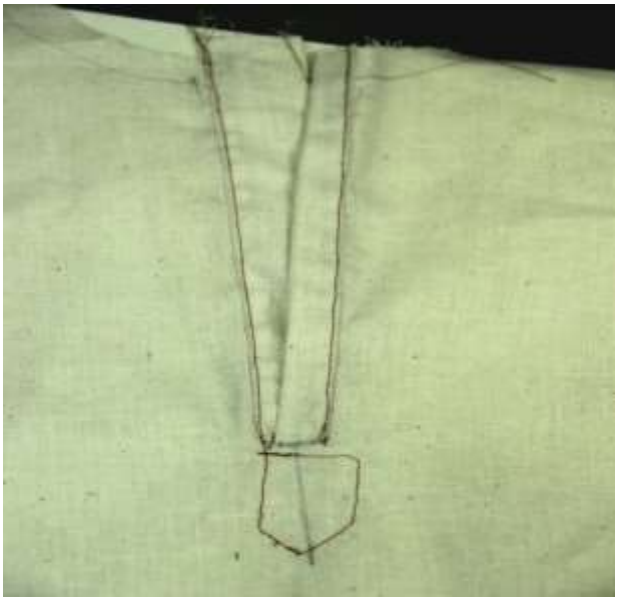

चित्र 7.2.2 ग

चित्र 7.2.2 घ

चरण 2: दर्जी के कोने के साथ कंधे जोड़ें और चित्र 7.2.3 में दर्शाए गए अनुसार सिलें।

चित्र 7.2.3

चरण 3: वस्त्र पर जेब स्थान अंकित करें। चित्र 7.2.4 में दर्शाए गए अनुसार चीर काटें जहां जेब मोड़ी जाती है। 1/4 इंच पर वस्त्र को सफाई से मोड़े और अगले 1/4 इंच पर मोड़ को दोगुना करें जैसा कि चित्र 7.2.4 क में दिखाया गया है। इसे भाप प्रेस करें और चित्र 7.2.4 ख और चित्र 7.2.4ग में दर्शाए गए अनुसार टॉप सिले।

चित्र 7.2.4

चित्र 7.2.4क

चित्र 7.2.4ख

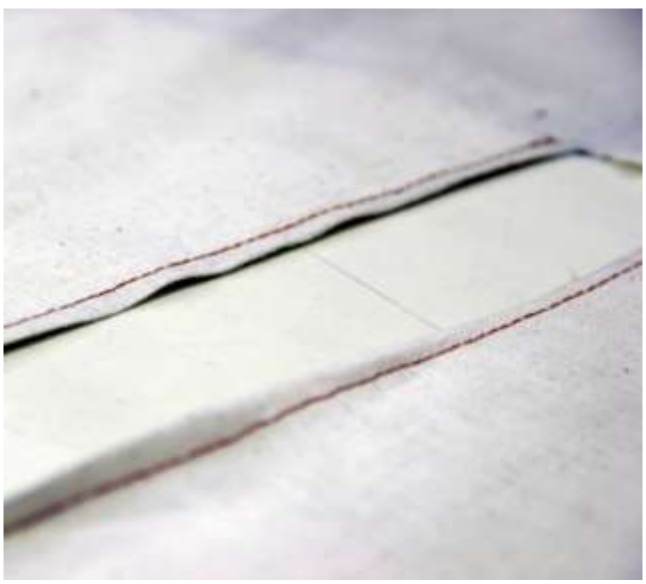

चित्र 7.2.4ग

चरण 4: कली की दाई ओर वस्त्र की दाई ओर होनी चाहिए। 1/2 इंच की टांका दूरी पर उलटी ओर से वस्त्र पर दूरी **सलें**। चित्र 7.2.5 के अनुसार कली को जोड़े।

चित्र 7.2.5

इसी प्रकार चित्र 7.2.5क और 7.2.5ख में दर्शाए गए अनुसार कली की समीपवर्ती ओर के साथ दूसरा पैनल जोड़े।

चित्र 7.2.5क

चित्र 7.2.5ख

चरण 5: निकासी स्तर तक दो पैनलों की टांका दूरी तक सिलाई जारी रखें। चित्र 7.2.5ग में दर्शाए गए अनुसार जेब मुंह खुले भाग तक **सलें**।

दाईं ओर एक दूसरे के सामने रखें, पैनल के उर्ध्वाधर भाग को बाजू के साथ **सलें**।

चित्र 7.2.5ग

चरण 6: तिरछी पट्टी के साथ गला रेखा तैयार करें। तिरछी पट्टी को गला रेखा की दाईं ओर रखें और चित्र 7.2.6 में दर्शाए गए अनुसार 1/4 इंच की दूरी पर **सलें**। पट्टी को मोड़ें और चित्र 7.2.6 क में दर्शाए गए अनुसार कोना **सलें**। चित्र 7.2.6 ख में दर्शाए गए अनुसार गला रेखा के साथ परिधान की उलटी ओर पट्टी को मोड़े । तिरछी पट्टी के अनिर्मित कोने को 1/4 इंच की दूरी पर मोड़ें और चित्र 7.2.6ग में दर्शाए गए अनुसार कोने पर टांका लगाएं। तैयार गला रेखा में पिछले भाग पर दोहरी सिलाई रेखा होगी और चित्र 7.2.6 घ में दर्शाए गए अनुसार अगले भाग पर एकल टांका रेखा होगी।

चित्र 7.2.6

चित्र 7.2.6 क

चित्र 7.2.6 ख

चित्र 7.2.6ग

चित्र 7.2.6 घ

चरण 7: चीरे को तैयार करने के लिए एक छोटा त्रिकोण काटें और इसके अनिर्मित कोनों को चित्र 7.2.7 में दर्शाए गए अनुसार मोड़ें।

चित्र 7.2.7

इसे उलटी ओर रखें और इसे चीर से जोड़ें और इसके लिए चित्र 7.2.7 क और चित्र 7.2.7 ख में दर्शाए गए अनुसार अगले भाग पर टॉप सिलाई करें।

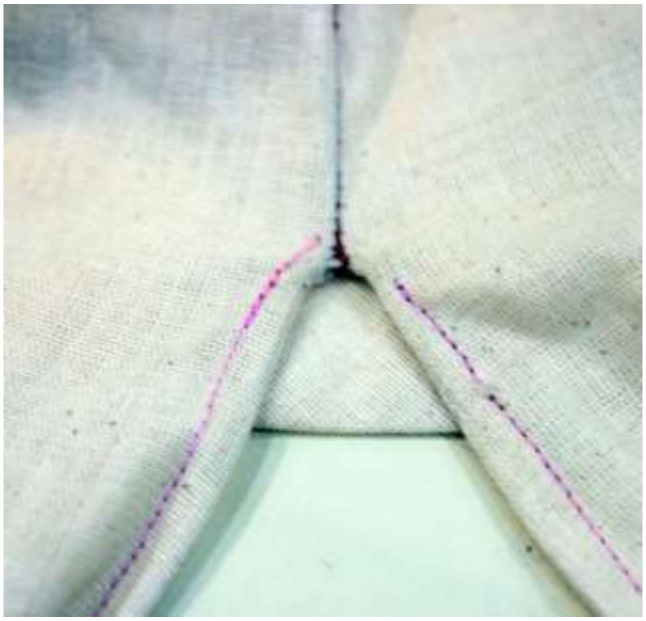

चित्र 7.2.7क

चित्र 7.2.7ख

चरण 8: चित्र 7.2.8 में दर्शाए गए अनुसार कमीज हेतु यथावर्णित किनारा रेखा तैयार करें।

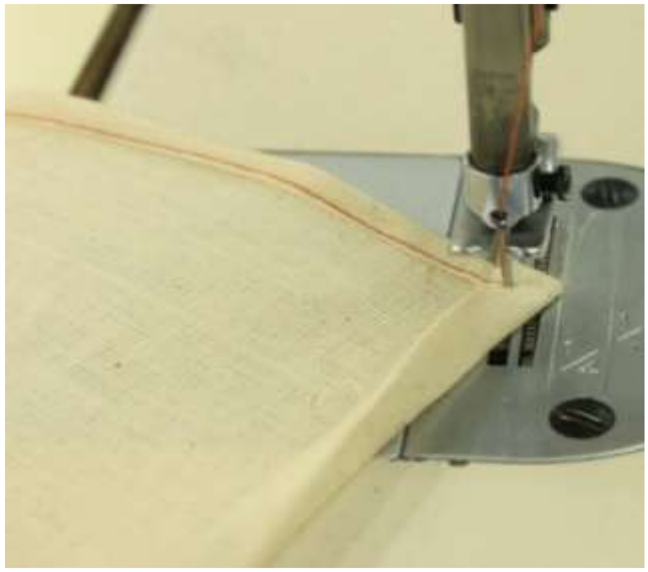

चित्र 7.2.8

चित्र 7.2.9 (चुनर बाजू के साथ एक तैयार कलीदार कुरता)

कार्यकलाप

चुड़ीदार पजामा एवं कलीदार कुरते के विभिन्न प्रकारों की तस्वीरें एकत्रित करें और उन डिजाइन ब्यौरों का चयन करें जिन्हें आप सिल सकते हैं।

खाली जगहों को भरें

1. चुड़ीदार के लिए मीटर वस्त्र लें और इसे मोड़ें .... और इसे फिर .... मोड़े।
2. कलीदार कुरते में .... पलैक्ट के साथ .... से .... बटन होते हैं।
3. कुरते की जेब कली के .... पर जुड़ी होती है।
4. कुरते के चुनट .... और .... के बीच जुड़ी होती है और बाजू को .... प्रदान करती है।
5. कुरते में साइड चीर .... टुकड़े के साथ .... है।

अध्याय 8

साड़ी ब्लाउज और चोली ब्लाउज का निर्माण

8.1 साड़ी ब्लाउज का निर्माण

मार्कर के अनुसार वस्त्र पर पैटर्न ट्रेस करें और सभी टुकड़ों को काटें।

(बाजू, साड़ी ब्लाउज, ग्रेन रेखा, पलैक्ट)

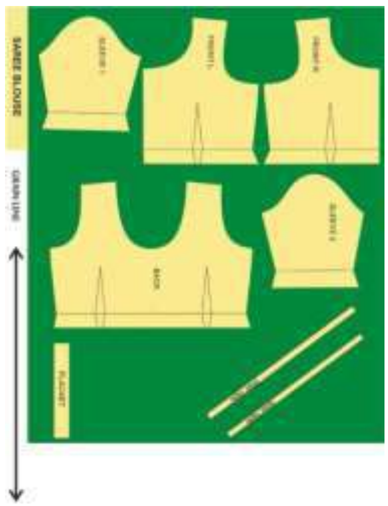

चरण 1: समाप्ति बिंदु पर दोबारा जोर डाले बिना सभी डार्टों को बंद करें। 1 इंच लंबा धागा छोड़े और चित्र 8.1.1 और 8.1.1 क में दर्शाए गए अनुसार घुमाएं।

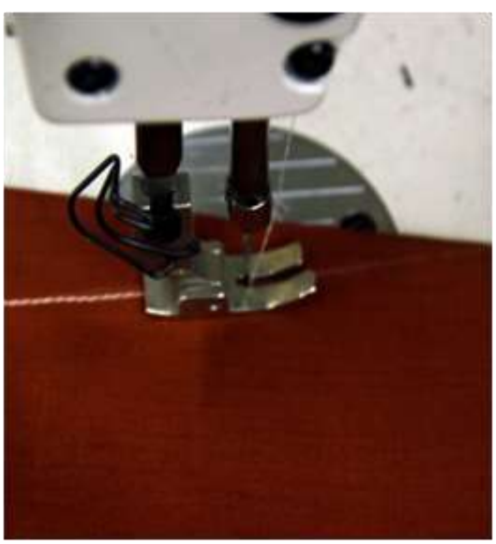

चित्र 8.1.1

चित्र 8.1.1 क

8.1.1 साड़ी ब्लाउज पलैक्ट का निर्माण

चरण 2: ओवर पलैक्ट को पलैक्ट की दाईं ओर को वस्त्र की दाईं ओर रखकर तैयार करें और चित्र 8.1.2 में दर्शाए गए अनुसार 1/4 इंच की दूरी पर सिलें। पलैक्ट को मोड़े और चित्र 8.1.2 क में दर्शाए गए अनुसार कोना टांके।

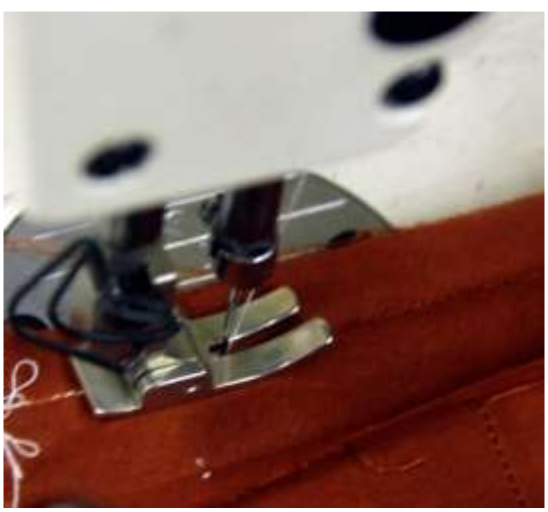

चित्र 8.1.2

चित्र 8.1.2 क

पलैक्ट को ब्लाउज की गलत ओर मोड़ें । अनिर्मित कोने को मोड़े और कोने पर टांका या चित्र 8.1.2 ख के अनुसार स्लिप किनारा दें।

चित्र 8.1.2 ख

चरण 3: अंडर पलैक्ट को पलैक्ट की उलटी ओर को वस्त्र की उलटी ओर रखकर तैयार करें और चित्र 8.1.3 में दर्शाए गए अनुसार 1/4 इंच की दूरी पर दाईं ओर सिलें।

चित्र 8.1.3

पलैक्ट को दाईं ओर मोड़ें । अब पलैक्ट के अनिर्मित कोने को तैयार करें और चित्र 8.1.3 क में दर्शाए गए अनुसार 3/4 इंच की दूरी छोड़ें। इसे 8.1.3 ख में दर्शाए गए अनुसार सिलाई रेखा पर रखें।

चित्र 8.1.3 क

चित्र 8.1.3 ख

कोना सिलाई इस प्रकार करें कि सिलाई पलैक्ट कोने को उलटी ओर आए, जैसा कि चित्र 8.1.3 ग और चित्र 8.1.3घ में दर्शाया गया है।

चित्र 8.1.3 ग

चित्र 8.1.3घ

चरण 4: चित्र 8.1.4 में दर्शाए गए अनुसार कंधों को फ्रेंच टांकों या दर्जी के कोने से जोड़े ।

चित्र 8.1.4

चरण 5: चित्र 8.1.5 में दर्शाए गए अनुसार साइड टांके को दर्जी के कोना टांके से बंद करें।

चित्र 8.1.5

चरण 6: बाजू के किनारे को स्लिप किनारे के साथ तैयार करें और चित्र 8.1.6 में दर्शाए गए अनुसार दर्जी के कोने के साथ टांके बंद करें।

चित्र 8.1.6

बाजू की दाईं ओर को चित्र 8.1.6 क में दर्शाए गए अनुसार ब्लाउज के बांह छेद की दाईं ओर पर रखें। चित्र 8.1.6 ख में दर्शाए गए अनुसार दोहरी सिलाई करें।

चित्र 8.1.6 क

चित्र 8.1.6 ख

चरण 7: तिरछी पट्टी के साथ गला रेखा तैयार करें। चित्र 8.1.7 में दर्शाए अनुसार 1/8 इंच की दूरी पर गला रेखा पर स्टे सिलाई दें । तिरछी पट्टी को आधे में मोड़ें ओर इसे धीरे से खीचते हुए **इस्त्री** करें। तिरछी पट्टी को गला रेखा के दाईं ओर रखें और चित्र 8.1.7 क में दर्शाए अनुसार 1/4 इंच की दूरी पर सिलाई करें।

चित्र 8.1.7

चित्र 8.1.7क

पट्टी को उलटी ओर मोड़ें और चित्र 8.1.7 ख में दर्शाए गए अनुसार पाइपिंग करें। इस खोल में सिले ताकि चित्र 8.1.7 ग में दर्शाए गए अनुसार दूसरी ओर पर पट्टी को सुरक्षित किया जा सके।

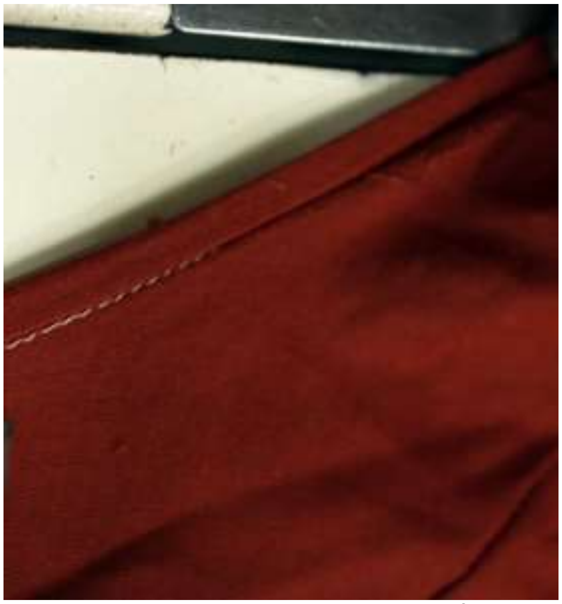

चित्र 8.1.7 ख

चित्र 8.1.7 ग

चित्र 8.1.8 तैयार ब्लाउज (अगला)

चित्र 8.1.8 तैयार ब्लाउज (पछला)

8.2 चोली ब्लाउज का निर्माण

मार्कर के अनुसार अपने पैटर्न को वस्त्र पर ट्रेस करें और क्रमशः चित्र 8.2.1 और चित्र 8.2.2 में दर्शाए गए अनुसार सभी टुकड़ों को काटें।

चित्र 8.2.1

चित्र 8.2.2

चरण 1: चार आवक्ष टुकड़ों को इस प्रकार जोड़ें कि ये स्वयं तैयार हो जाए।

आवक्ष टुकड़ों की दाईं ओर को एक दूसरे की तरफ रखिए और चित्र 8.2.3 में दर्शाए गए अनुसार उलटी ओर सिलाई करें।

चित्र 8.2.3

चरण 2: साइड पैनलों को आवक्ष कपों के साथ जोड़ें और इन्हें चित्र 8.2.4 और 8.2.4 क में दर्शाए गए अनुसार कप पैनलों के मध्य प्रवेश करें।

चित्र 8.2.4

चित्र 8.2.4 क

चरण 3: साइड टांकों पर पिछले भाग को अगले भाग से जोड़ें और जोड़ों को पिछले भाग में जोड़े।

चरण 4: दोनों आधे भागों के केन्द्र को जोड़ें और दोनों की दाईं ओर एक –दूसरे के सामने हो और चित्र 8.2.5 और 8.2.5क में दर्शाए गए अनुसार उलटी ओर सिलाई करें।

चित्र 8.2.5

चित्र 8.2.5क

चरण 5: कमरबंध को जोड़े, जिसे 2 में काटा गया है। चोली को दो कमरबंध पट्टियों के बीच में रखें और चित्र 8.2.6 और चित्र 8.2.6 क में दर्शाए गए अनुसार सिलाई करें।

चित्र 8.2.6

चित्र 8.2.6 क

चरण 6: साड़ी ब्लाउज के समान की तिरछी पट्टी के साथ गला रेखा तैयार करें।

चित्र 8.2.7 (चोली का तैयार अगला भाग)

चित्र 8.2.8 (तैयार चोली ब्लाउज)

कार्यकलाप

पत्रिकाओं से ब्लाउजों के विभिन्न प्रकारों के चित्र एकत्रित करें और स्क्रैप बुक कराएं।

खाली जगहों को भरें।

1. साड़ी ब्लाउज में................................ टुकड़ा .... होता है जिसमें ब्लाउज को बांधने के लिए हुक और आई होती है।

2. चोली ब्लाउज में .... टुकड़ा होता है जिसे .... पर काटा जाता है।

3. चोली ब्लाउज के कमरबंध को .... ग्रेन पर काटा जाता है और इसमें .... डार्ट होता है।

4. .... और चोली टुकड़े को मजबूत करने के लिए .... काटा जाता है।

5. चोली के चार .... टुकड़े इस प्रकार सिले जाते हैं कि वे.................................हों।